बोला कि कुसूर माफ़ हो तो बन्दा अर्ज करे।

आलीजाह जहांपनाह ग्वालियर के सूबेदार को हुक्म फ़रमाया जावे कि वह जहां २ हिन्दुओं के नामी तीरथ बुन्देलखंड में पावे वहां कार बुतशिकनी बजालावे और मन्दिरों को तोड़ कर उनकी जगह पर मस्जिदें बनवाई जावें कि जहां पर मौलवी लोग नमाज पढ़ें जिससे अल्लाह ताला खुश होकर दीन इस्लाम को तरक्की बख्शे और हुजूर की मुरादें बर आयें।

इस उपरोक्त मंत्रणा के अनुसार औरङ्गजेब ने ग्वालियर के सूबेदार फिदाईखां को एक आज्ञापत्र भेजा जिसका आशय यों था।

सुना जाता है कि बुन्देलखंड के कुफ्फार हिन्दू लोग निहायत बेखौफी के साथ बुतपरस्ती करते हैं और दीन इस्लाम की तेज तलवार की धार से हर्गिज नहीं डरते। खास ओरछे का राजा सुजानराय खुद इस मज़हब का पाबंद है लिहाज़ा हुक्म हुआ कि—

तुम एक लश्कर जर्रार लेकर बुन्देलखंड पर चढ़ाई करो, मन्दिरों को तोड़ो, (मूरतो) बुतों को फोड़ो और जो अशखास तुम्हारे रास्ते में आवें बराबर अपने कार कुफ्फ़ार की सज़ा पावें।

फिदईखां ने शहंशाह की इस प्रकार आज्ञा पा कर उधर तो एक ख़त शाही फरमान के मंजूरी के जवाब में लिखा और इधर एक ख़त महाराज सुजानसिंह ओरछाधिपति को लिखा कि इस माफक दरबार शाही

से हुक्म हुआ है। लिहाज़ा आपको इत्तला दी जाती है किया तो आप खुद इस बात का इ तज़ाम करें और मुझे कार बुतशिकनी में मदद दें या शाही हुक्म अदूली का जो नतीजा होता है उसे अपने सर पर लें।

फ़िदाईखां के इस पत्र को पाकर ओरछाधिपति की क्या दशा हुई सो पाठक स्वयं विचार सकते हैं। एकदम उनकी रगों का खून ठंढा होगया। राजा, मन्त्री आदि सब 'कर्तव्यविमूढ़' होगए अर्थात् "गुड़ भरा हसिया" होगए। उक्त फ़िदाईखां के उत्तर में 'हां' कहने में संसार में अपकीर्ति और परलोक में नर्कबास होता है और 'ना' कहने से राज्य जाता है, अगनित प्रजा का रक्त पात होकर प्रजा का नाश होता है तिसपर भी होनहार रुकने की नहीं। हाय क्या हो! क्या न हो! यही समय विचार करने का है मनुष्य की बुद्धि की परीक्षा ऐसे ही समय में होती है, जो ऐसे समय में स्थिर बुद्धि रह कर उत्तम उपाय विचारे वही पण्डित है।

वीर छत्रसालजी सुभकरन से बिदा होकर औरङ्गा-बाद की जानिब रवाना हुए। वहां इनके चचेरे भाई बल-दिवान कालक्षेपन कर रहे थे। छत्रसालजी और बल-दिवान दोनों भाई बड़े प्रेम से मिले। दोनों ने एक थाल में भोजन किया, दोनों भाई सायंकाल के समय एकत्र बैठे कुछ देर पर्यन्त इधर उधर की बातें करते रहे। अंत में वीर छत्रसालजी ने कहा कि दाऊजी साहब मैं आप से कुछ गूढ़ प्रार्थना करना चाहता हूं इस हेतु हम

आप दोनों कल बन में अहेर करने चलेंगे। क्योंकि नीति का वाक्य है कि यदि कुछ गूढ़ मन्त्र करना हो तो निर्जन बन वा खुले मैदान में दिन के समय करे। प्रातः होतेही दोनों भाई अस्त्र शस्त्र धारण करके मृगया के बहाने यवनया के विचार पर पधारे और एक जनशून्य स्थान में पहुंच कर बीर छत्रसाल जी ने बलदिवान से जो प्रार्थना की उसका सारांश यह है।

छत्रसालजी बोले "दाऊजी साहब मैं संसार की सब बातें त्याग कर अपनी देशरक्षा वा पितृ बैर लेने के निमित्त अपना यह अनित्य शरीर अर्पण कर चुका हूं आशा है कि आप भी मेरा साथ देंगे। देखिये त्रेता में रामचन्दजी और लक्षमण जी ने रावण को हनन किया। द्वापर में कृष्णा बलराम ने कंस का सत्यानाश किया। इसी प्रकार जहां जिसने जै प्राप्त की है केवल परस्पर प्रेम और मेल से की है। और अधिक क्या बिनय करूं जगत्पिता सच्चिदानन्द परमात्मा भी स्वयं दो स्वरूप होकर प्रकृति देवी की सहायता से प्रकृति और पुरुष मय प्रशास्त जगत को निर्माण करके विचित्र लीला कर रहा है। प्रकृति से बनाहुआ शरीर जीवात्मा के संयोग सेही सब कर्म करता हैऔर इन दोनों के बिछोह होने अर्थात् मरने पर केवल शरीर मात्र कुछ नहीं कर सकता अतएव मुझे आप पर दृढ़ विश्वास है कि आप मेरी सहायता करेंगे।

उत्तम, मध्यम, नीच अनेक प्रकार की तरंगें मनुष्य

मात्र के हृदय समुद्र में समय २ पर उठा करती हैं परंतु जिस लहर पर दैव की कृपा होती है वही इष्ट भाव धारण करके गाढ़ इच्छा वा अभिलाषा रूपी बनजाती है। तत्पश्चात् कृतकार्य्य पद धारण करते हुए परिणाम स्वरूप होकर उसके सुख व दुःख का कारण होती है। इन्हीं उपरोक्त तरङ्गों का नाम "कल्पना" है। और इन्हीं कल्पनाओं से पूर्वकृत कर्मों का परिचय होता है। कारण कि अन्तिम समय में जो वासना चित्त में रहती है उसीके अनुसार पुनर्जन्म होता है। चाहे कोई भी कल्पना को असार, या अनित्य कहे परन्तु मेरे जान तौ संसार में कल्पना ही सार और सत्य है। कल्पना अनित्य और असार है, यह केवल ब्रह्म ज्ञानी सन्यासियों के लिये है।

बलदिवान का चित्त मुसल्मानों के अत्याचार से प्रथमही से खिन्न हो रहा था 'आज भुस में आग पड़ गई' इनके मन का क्लेशभाव और भी बढ़ गया 'सत्य है जा कर जापर सत्य सनेह, मिलै ताहि नहिं कछु संदेह' निदान बलदिवान ने बड़ी प्रशंसा से बीर छत्रसाल जी के वाक्यों का अनुमोदन किया। उन्होंने कहा कि धन्य हौ भाइ बीर छत्रसाल जो धन्य हौ! आप क्षात्री धर्म को धारण किये हुए पूर्ण बीर पुरुष हौ। सत्पुरुषों का यही लक्षण है कि आपत्ति में धीर धरना, शत्रुओं का हनन करना, शरण आये हुए की रक्षा करना, जिस प्रकार बढ़ती हो उतनी ही नम्रता धारण करना, सत् विद्या में और सत्कार्यकर्त्ता पुरुषों की सहायता करना वा उनका

उत्साह बढ़ाना, असत्पुरुष वा असत् वस्तुओं का नाश करना, प्राण के पलटे पर भी धर्म रक्षा करना, ज्ञाति बान्धवों की उन्नति के हेतु उपाय करना और स्वर्ग के लोभ से भी प्रपंच में पड़ कर अकर्तव्य कर्म न करना इत्यादि, प्यारे भाई आप इन गुणों से स्वभावतः भूषित हैं, वास्तव में आप में उत्तम श्रेणी के पुरुषों के लक्षण देख पड़ते हैं।

प्राण प्रिय भाई वीर छत्रसाल जी आप इस उत्तम कार्य्य को आरंभ करना चाहते हो तो इससे भला और क्या हो सकता है। मैं इससे प्रथक होकर क्यों वृथा अपयश भाजन बनू! क्या जाने बिधाता ने स्वज्ञाति उन्नति स्वदेश रक्षा के हेतु आपही को निज (बुन्देल) कुल-कमल दिवाकर उत्पन्न किया हो । ईश्वर बड़े से ले कर छोटे २ पर्य्यंत संसार के सब कार्य्य स्वयं करता है और ईश्वर से दूसरे पद पर मनुष्य यन्त्र स्वरूप है। इस हेतु मनुष्य को उत्तम कार्य्य के निमित्त उपाय करना आवश्यक है । कार्य्य का होना न होना ईश्वरेच्छा पर निर्भर है। किन्तु भाइ जिस कार्य्य का परिणाम जितना उत्तम होता है, उसका निर्वाह करना भी अवश्य उतना ही कठिन होता है और तिस पर भी मत्थे पर पगड़ी बांध कर किसी कार्य्य में अगुआ होना तो बड़ी ही कठिन बात है अतएव अपने संकल्पित कार्य्य के निमित्त जिन २ बस्तुओं की आवश्यकता है उनमें से एक भी अपने पास नहीं है इसी से मन तनिक कातर होता है। न जाने पर-

मात्मा की क्या इच्छा हो ?

और तो जो कुछ बल दिवान ने कहा सो मानों साँक्षात् बोर छत्रसालजो के ही विचारों का प्रतिबिंब था; किन्तु अंतिम बात में कुछ अंतर पड़ा सो भो बीर छत्रसालजो ने गंभोर भाव से दो बातों में एक मथ कर लिया । छत्रसालजी बोले कि दाउजी साहब आपकी कृपा से सब वस्तु सन्नद्ध हैं केवल "श्री गणेश" करने की विलंब है यदि आप कुछ परोच्चा चाहते हो तो ऐसा कीजिये कि दो पत्र एक में (यवनोंप्रति) स्वाधीनता दूसरे में आधीनता लिखकर भगवान 'श्रीरामचन्द्रजी' के मंदिर में रख कर किसी अनपढ़ से एक पत्र उठवाइये जो पत्र उठे वही आज्ञा जानिये ।

दोनों भाई अहेर के फेर से फिरते २ घर आये। रात्रिकुशल से बीती । प्रातःकाल होते ही स्नान ध्यान करके दोनों भाई भाग्य की परीच्चा करने के निमित्त देव मंदिर में गये । यहां से भी स्वाधीनता की ही आज्ञा हुई ।

संसार में ईश्वर से परे कोई वस्तु नहीं है। ईश्वर के घर से भी जिस कार्य्य के करने की आज्ञा होगई फिर विलंब क्यों? और प्रतीच्चा किस वात की? तुरंतही बलदाऊ ने छत्रसालजी को बाचा दी कि आप अवश्य सैन एकत्र करने का उद्योग करें, मैं प्रस्तुत हूं और तब तक मैं यहीं कुछ उद्योग करूंगा । नियत समय पर जहां से आप समाचार भेजेंगे मैं तुरन्त ही आ पहुंचूंगा ।

निदान बीर छत्रसालजी वहां से मनही मन आनन्द की दुंन्दभी बजाते अपने पिता के पुराने साथियों को शुभ समाचार जनाते, घर को ओर चले आते थे। छत्रसालजी की फौज क्रमशः मोर पहाड़ी पर (जो बीर छत्रसालजी का जन्म स्थल है) जमा होने लगी *।

औरछाधिपति महाराज सुजानसिंह जैसी आपत्ति में पड़े हुए थे सो ता आप पर प्रगट है ही परंतु इसका क्या उपाय हो ! किस प्रकार से आपत्ति हटे ! इस विचार में राजा प्रधान प्रजा इत्यादि सब मुग्ध थे। किसी को कुछ युक्ति नहीं सूझती थी। इसी समय एक गुप्त चर ने खबर दी कि चंपतराय के पुत्र छत्रसाल मोर पहाड़ी के जंगल में ठहरे हुए हैं। और नित प्रति मनुष्यों का जुड़ाव वहां अधिक होता जाता है। इस वार्ता को सुन कर मंत्री महाशय के दम में दम आया। मानों बहते हुए को अटकाव मिला। तुरंत दरबार बरखास्त हुआ। तब एकान्त में मंत्री महाशय ने राजा सुजानसिंह से प्रार्थना की कि महाराज ईश्वर परम कृपालु है देखिये घरही बैठे कैसा उत्तम उपाय मिला। बिनप्रयास अपने सर से उपद्रव टला। नीति की आज्ञा है कि हाथ में लिए हुए कांटे से कांटे को निका-

---

* छत्रप्रकाश में लिखा है कि छत्रसालजी ने बल दिवान के पास से आकर सैन्य तैयार की और तब फिर उलटे औरंगाबाद गये और फिर यहां वापिस आये। उधर लिखा है कि छत्रसालजी ओरछे में भी थे। इसलिये दो चार किताबों तथा जुबानी कहानियों से जो कुछ पाया गया उसी का उल्लेख किया है।

लना चाहिये अर्थात् जब अपने दो शत्रु हों तो एक को अपने हांथ में करके दूसरे से भिड़ा दे, और चिंतित कार्य्य हो जाने पर एक को आप स्वयं दमन कर डाले। सो महाराज! छत्रसाल अपने प्राचीन शत्रु का पुत्र है और विदित होता है कि इस समय वह अपने पितृव्य कर्म करने पर उद्यत है। बस उसी को बुला कर शिष्टाचार कोजिये, केवल इतने में ही कार्य्य सिद्धि हो जावेगी, जो कुछ होगा वो खुद जा भिड़ेगा। जो होगा सो वह आप भोगे गा, आप भले के भले। लीजिये मंत्र सिद्धि हुई और एक चतुर सभासद वीर छत्रसालजी को बुलाने के लिये भेजा गया। वीर छत्रसालजो ने सभासद(रतिराम) को आदर पूर्वक अपने पास बुलाया और उसने भी महाराज सुजानसिंह की ओर से पत्र दिया और अपने यहां जाने का आशय कह सुनाया। वीर छत्रसाल ने पत्र पढ़ कर प्रधान को एक दिन ठहरने की आज्ञा दी और रात्रि में आप बलदिवान और अंगदराय तीनों भाइयों ने मिल कर ओरछा जाने की सलाह की। भोर होते ही छत्रसालजी ने ओरछा (ठीकमगढ़) की तरफ कूच कर दिया।

ओरछा पहुंचने पर राजा सुजानसिंह की ओर से इनका यथोचित सत्कार किया गया। सायंकाल के समय ये तीनों भाई राजा सुजानसिंह से मिलने को गए। उस दिन तो मिल मिला कर दरबार योंही रहा दूसरे दिन तीनों भाई छत्रसाल, और प्रधान मन्त्री सहित राजा

सुजानसिंह और पांच पंच भगवान चतुर्भुजरायजी* के मन्दिर में गए वहां पर अब सुजानसिंह का षड्यंत्र चला। चम्पतराय की मृत्यु पर बहुत कुछ पश्चाताप करके सुजानसिंह ने मतलब की बात छेड़ी, वह बोले छत्रसाल जी आपके दर्शन पाकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ, धन्य हैं, आप बीर पुरुषों के बीर सपूत हो आपने बहुत ही अच्छा किया जो निज धर्म रक्षा के हेतु कटिबध्य हुए। ईश्वर आपकी रक्षा करेगा। इस बात को सुन कर मुझे असीम आनन्द हुआ। इसीसे आपको यहां तक आने का कष्ट दिया है। मेरा भी यही अभीष्ट है कि आप इस धर्म कार्य्य को दृढ़ता पूर्वक कीजिये और जिस प्रकार मुझे आज्ञा दीजिये मैं भी आपको सहायता करने को प्रस्तुत हूं।

बीर छत्रसाल जी भी परम चतुर और नीतज्ञ पुरुष थे। उन्होंने भी चतुरता पूर्वक उत्तर दिया कि मैं तो इस कार्य्य पर प्राण न्यौछावर कर ही चुका हूं यदि कुछ सन्देह है तो आपही की ओर से, आपही को राज्य का भय है और भयभीत मनुष्य ही कुकार्य्य करता है। महाराज पहिली बातों को कौन कहै, इस समय इतनाही कहना हूं कि कहना सरल है परन्तु निर्वाह करना कठिन होता है।

---

* औरछे में चतुरभुजराय (रामचन्द्र जी) की प्रतिमा बहुत पुरानी है यह कहा जाता है कि यह मूर्ति श्री कृष्ण जी के पौत्र की प्रतिष्ठित की हुई है।

हाय कुकर्म भी कैसी बुरी वस्तु है कि इसका कर्ता अगुन बीर होने पर भी लज्जित होकर अधोमुख करता है। बीरछत्रसाल का उत्तर सुन कर सुजानराय वा मंत्री महाशय दोनों के नेत्र नीचे होगए। मुख से बचन नहीं कहते बनता था, किन्तु फिर भी साहस करके उन्होंने प्रति उत्तर दिया। वह बोले—बीर छत्रसाल जो बीती हुई बात जाने दीजिये और अब आगे जो कुछ कर्तव्य है उस ओर ध्यान दीजिये। जो हुआ सो हुआ, आपकी ओर से हमारे प्रति सदैव रक्षा रही है। उस समय हलचल पड़ने पर राव उदयाजोत की सहायता से ओरछे की राज्यधानी स्थापित हुई। चम्पतराय जी ने यवनों के उपद्रव से देश को बचाया उन्हीं के बीर पुत्र आप हैं और आपने यही धर्म धारण किया है कृपया आप भी इसी देश में हमारी रक्षा कीजिये। इस प्रकार कह कर राजा सुजानराय ने अपना खड्ग भगवान चतुर्भुजराय जी के सम्मुख रख कर प्रतिज्ञा की कि जो कोई किसीके साथ दगा करे तो उसके साक्षी श्रीभगवान चतुर्भुजराय जी हैं और वही तलवार अपने हाथ से उठा कर बीर छत्रसाल को समर्पण की। किंवदन्ती है, कि सुजानराय ने छत्रसालजी को सहायतार्थ कुछ द्रव्य भी दिया था। निदान बीर छत्रसाल जी यहां से बिदा हो कर फिर सैन संग्रह करने में लग गए।

बीर छत्रसाल जी के कठिन परिश्रम से इस समय उनके साथ दो सौ पैदल और तीस सवार इकट्ठे होगए। गोबिन्दराय जैतपूर वाले, कुंअर नारायणदास, सुन्दरमन

प्रमार, दलसिंगार और राममन दौवा, मेघराज पड़िहार, धुरमाङ्गद बगसी (कायस्थ) किशोरी खागर, लच्छेरावत, राममन, मानसाह, हरबंस, मेघी, भानुभाट (राव) फौजे (मुसल्मान) साईस खास, बंवल कहार, पत्ते वैश्य ये लोग इनके पिता के सङ्गी वा उनके खास पुत्र पैात्रों में से थे। इस प्रकार दल बादल जोड़ कर बलदिवान की मन्त्रणानुसार बीर छत्रसाल बिजैारी के रतनसाह बुन्देला के पास गए। रतन साह ने भी इन्हें सम्मान पूर्वक अगमानी देकर लिया। दो एक दिन वहां रह कर बीर छत्रसाल जी ने अपने मतलब को बात छेड़ी उन्होंने कहा कि हे बीर रतनसाहजी मैंने सम्राट औरङ्गजेब के संमुख अस्त्र धारण करने का प्राण किया है निदान आप से भी निवेदन है कि मेरा साथ दीजिये, हमारे अधिपति बन कर रहिये। हम सब आपकी सेवा करेंगे। यदि आप हमारे प्रण के नियम जानना चाहते हैं तो इस प्रकार हैं सुनिये—

(१) क्षत्री धर्म को धारण करना।

(२) अपने देश वा धर्म को रक्षा करना बंधुवर्ग को उन्नति के हेतु उपाय करना।

(३) धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाले, प्रजा को कष्ट देने वाले, यवनों का नाश करना।

(४) जो भूम्याधिकारी हमारी आज्ञा पालन करेंगे हमसे रक्षा किये जावेंगे। और जो विजाती यवनों की आड़ में खेल कर हमसे विमुख होंगे वे अपने किये का फल पावेंगे, हमसे हनन किये जावेंगे।

"यतोधर्मस्ततोजयः" जहां धर्म है वहां जय है। इसीसे मेरा दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर मेरी सहायता पूर्ण करेगा। ईश्वरेच्छा से—"शत्रु भागि हैं मान भय, लोग लहैंगे साथ। तेज छाय है दिशन में देश आय है हाथ।

वीर छत्रसाल का प्रस्ताव अङ्गीकार हुआ था नहीं सो आगे देख लीजियेगा; किन्तु रतनसाह ने इस प्रकार प्रश्न किये। भाई छत्रसाल क्या विना आशय के भी चित्र बनता है? इस कार्य्य के निमित्त तुम्हारे पास द्रव्य तथा सैन्य कहां है? भेड़ में भी क्या हाथो से लड़ने की ताकत होती है? इस कार्य्य में तुम्हारा सहायक कौन है? तुम्हारा मन्त्री कौन है? मन्त्री, सेना, कोष, जा, ये चारों राज्य के मुख्य अङ्ग हैं सम्राट इन सब वस्तुओं से भूषित है आपके पास इनमें से कोई भी हैं? क्या तुम्हारे पिता ने नहीं कर देखा? भाई व्याह प्रीति वैर समान्य से करना होता है। प्रबल शत्रु कर लेना जान बूझकर अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मारना है।

इन प्रश्नों के प्रति वीर छत्रसाल जी का उत्तर श्रोतव्य है बोले--दाउजी साहब नीति न्याय सब कल्पित है, केवल ईश्वर सत्य है। वही मेरा सहायक है, वही मेरा मन्त्री है, यह सार गर्भित संसार उसकी इच्छा से निर्मित है, वह सूक्ष्मरूप से जड़ चैतन्य सब वस्तुओं में इस प्रकार व्याप्त है जैसे पत्थर में अग्नि, उसी ने प्रत्येक वस्तु के निमित्त जो नियम रच दिये हैं उन्हींके अनुसार

चलने में सुख है। वही मेरा कोष है, वही मेरी सेना है और उसी करुणासिन्धु भगवान के भरोसे पर मैं अपना कार्य्यारंभ करता हूं और जो पिता जी की आपने मिसाल दी सो सुनिये कवित्त—जेहि सरितान सागरान शेख्यो नीर, सोई सरितान सागरान नीर भरिहै। जिहि तरुवरन को पत्रन विहीन कियो, सोई तरुवरन मांझ फेर पत्र करिहै॥ जेहि राजा बलि को ऊंचे से पताल भेजो, सोई राजा बलि को फेर इन्द्र करिहै। धरे रहो धीरज बीर अक्षर अनन्य भने, जोहि उपजाई पीर सोई पीर हरिहै॥

ईश्वर परम कृपालु है। वह केवल स्मरणमात्र से अपने जन की रक्षा करता है। उसीने मुझे यह बुद्धि दी है वही इस कार्य्य में सिद्धि भी देगा।

सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ने और वस्तुएं निर्माण करके प्रत्येक को नियम बद्ध कर दिया है। केवल मनुष्य मात्र ही एक ऐसा जीव इस सृष्टि में है कि जिसे उसने बुद्धिबल के भरोसे पर स्वाधीनता प्रदान की है और उसे एक मात्र बुद्धि के सहारे पर छोड़ कर उसके कर्म के अनुसार उसे परिणाम देता है। मनुष्य के लिये प्रत्येक कार्य के निमित्त केवल उपायही नियम है; इस हेतु मनुष्य को उचित है कि हृदय को दृढ़ करके सदैव ईश्वर को अपना रक्षक जान कर उत्तम धर्म मय कार्य्य के निमित्त उपाय करे और परिणाम को पूर्व कृत कर्म वा ईश्वराधीन जान उस ओर ध्यान भी न दे। उत्तम कार्य्य का फल सदैव उत्तम होता, इसमें सन्देह नहीं।

वर्णाश्रम धर्म के अनुसार भी देखिये ब्राह्मणों का धर्म उत्तम विद्या पढ़ना पढ़ाना और सत्कर्म करके संसार का उपकार करना है, क्षत्रियों का धर्म दुष्टों को दमन करना और प्रजा की रक्षा करना है, वैश्यों का धर्म वाणिज्य, और शूद्रों का धर्म तीनों वर्णों की सेवा करना है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को निजधर्म ही श्रेयकारी होता है अन्यथा नहीं। इसीसे विचार देखिये कि यदि ईश्वर को संतोष वृत्ति पर ही हमारी जीविका मंजूर होती तो हमैं ब्राह्मण क्यों न बनाता। संतोष वृत्ति सन्यासियों के निमित्त कही गई है न कि हम क्षत्रियों के निमित्त।

वीर छत्रसालजी ने १८ दिन पर्यंत बहुत कुछ नीति न्याय समझाई परन्तु रतनसाह के मन में एक न आई और अंत में टका भर जीभ के बदले पंसेरी भर सिर उन्होंने हिला दिया।

अट्ठारहवीं रात्रि को वीर छत्रसालजी से कोई स्वप्न में कहता है कि—रे छत्रसाल तू नहीं जानता कि तेरा अमूल्य समय नष्ट हो रहा है, उठ अपना कार्य आरंभ कर किसी की प्रतीक्षा न कर, ये लोग स्वयं तेरी शरण में आरहेंगे "गुड़ पर मक्खी आप आ लगती हैं" दुनियां बढ़ती की साथी है। आहा! इस आनन्द मयी स्वप्न निद्रा से जो उनकी आंख खुली तो देखते क्या हैं कि सैकड़ों मनुष्य आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कोई इनके पिता का सङ्गी, कोई पिता के सङ्गी का लड़का, कोई पोता, कोई रिश्तेदार, इस प्रकार सबको वीर छत्रसाल जी के चन्द्र

मुख का दर्शन हुआ। सबका प्रणाम हुआ और अपने २ प्रणाम का परिणाम भी सबने यथोचित पाया।

निदान बीर छत्रसाल जी यहां से पयान कर आनन्द की बंसी बजाते औंड़ेरा में आये। यहां पर मुखिया अर्थात सबके मालिक थापे गये। वल दिवान युवराज पद पर नियुत हुए। और इस प्रकार हिस्सा ठहरा कि लूट में ज़र ज़मीन जो कुछ हाथ आवे उसमें $\frac{५५}{१००}$ वीर छत्रसाल का हिस्सा और $\frac{४५}{१००}$ वलदिवान का हिस्सा हो।

छत्रसालजी ने पहिले पहल सन् १६७१ ईस्वी, संबत चैत्र सुदि ११ पुष्य नक्षत्र में तीन सौ सैंतालीस पैदल तीस सवार लेकर धंधेरखण्ड की ओर अपने लश्कर की बाग उठाई। उस ओर से कुंअरसेन धंधेरा सर्दार इनके सम्मुख आया, किन्तु अंत में हार कर उसे सकरहटी के किले में शरण लेनी पड़ी। छत्रसाल ने उस का वहां भी पीछा न छोड़ा और वहां किले में घुस कर उसे कैद कर लिया। तब उसने वीर छत्रसाल की आधीनता स्वीकार कर ली और अपने भाई हिरदेसाह की बेटी 'दानकुंअरि' इन्हें ब्याहदी। यही छत्रसाल की मझली रानी हैं। और उसका एक सर्दार केसरीसिंह २५ आदमियों सहित इनके साथ होलिया।

इस समाचार को सुन कर सिरौंज के साही थानेदार महम्मद हासिमखां ने अपने एक विश्वासपात्र मित्र और ३०० सिपाहियों को साथ लेकर छत्रसाल के राह रोकी। राह में आगे डंके की घोष सुनकर वीर छत्रसाल

ने भी अपनी मुरली बजाई और वे अपनी सेना को एक व्यूह रूप बना कर शत्रु सेना को मार काट करते हुए निकल गए और इसी महम्मद हासिम के आधीन तिवरो पर हमला किया। गांव को लूट कर जो कुछ मिला लेते गये और वहां के पटैल सर्दार से एक बच्छो नांम की घोड़ी छीनी। इस प्रकार दो चार चोटें करने में वीर छत्रसाल जी के नांम का शोर मच गया और इसी से क्रमशः इनकी सैन्य भी अधिक हो गई।

अब वीर छत्रसाल जी ने पितृ बैर लेने की प्रतिज्ञा पूर्ण करने के निमित्त धामौनो की ओर यात्रा की। इनकी खबर सुन कर धामौनी के जागीरदार भी सन्नद्ध होबैठे। ८ दिवस पर्य्यन्त खूब रक्त पात हुआ अंत में उन लोगों ने हार कर वीर छत्रसाल की आधीनता स्वीकार कर ली, कुछ मुद्रा नक्द देकर और चौथ देने का वादा करके अपना पीछा छुड़ाया।

इन्हों ने धामौनो से चलकर मैहर पर धावा मारा। मैहर का राजा इस समय केवल द्वादस वर्षीय बालक था। इस कारण इनकी माता राज्य का प्रबन्ध करती थीं। जब छत्रसाल ने नगर जा घेरा तब राज्यमाता की आज्ञानुसार वहां के सेनापति माधवसिंह बड़गूजर ने इनसे युद्ध प्रारम्भ किया, ये लोग किले में थे और वीर छत्रसाल जो मैदान में, इसलिये यहां इनको बहुत कुछ क्षति हुई खूब गोला गोली चले बारहवें दिन रात्रि को वीर छत्रसाल की फौज पिछवाड़े से किले पर चढ़ गई और

किला अपना लिया और माधवसिंह को गिरफ्तार कर लिया। तब राज्यमाता ने ३०००) रुपया सालाना कर देने की प्रतिज्ञा करके अपने सेनापति को छुड़ाया और आप खुद छुटकारा पाया।

इस समय जो जहां था सो तहां का राजा था। ऐसा हो एक 'दांगी' सर्दार बांसा का जागीरदार था जो उस समय १०००पैदल और २००घोड़सवारों का मालिक था। बीर छत्रसाल की बीरता की प्रशंसा सुनकर ताड़ गया कि एक दिन न एक दिन वह मुझपर भी चोट करेगा तो अभी से प्रस्तुत हो बैठना उचित है। इस विचार से उसने अपने आने बाने दुरुस्त कर रक्खे थे, और हुआ भी ऐसाही। बीर छत्रसाल जी उसकी बीरता पर मोहित थे और एक दूसरे की बीरता की परीक्षा लेने को व्यस्त थे। बीर छत्र-साल ने केशवराय के पास एक पत्र भेजा कि या तो हमारी आधीनता स्वीकार करो या सम्मुख आकर मेरा शस्त्र प्रहार सहो। बीर छत्रसालजी का पत्र पाकर के-शवराय मनही मन मुस्कराया और उसने अंतिम बात स्वीकार की और पत्र का उत्तर इस प्रकार दिया कि—

महाशय! आपका कुशल पत्र पाकर मेरे हृदय में असीम आनन्द प्राप्त हुआ। ईश्वर आपका कुशल करे। मैं स्वयं चिरकाल से आपके दर्शनों का अभिलाषी था। धन्य भाग्य जो आपका पत्र मिला। अब स्वयं आप से मिलने को इच्छा शेष है किन्तु क्षण मात्र के लिये नहीं सदैव के लिये। मुझे यह पूर्ण रूप से विदित है कि आप

वीर पुरुष हैं किन्तु दो वीर सिंहों का एक स्थान में रहना प्रकृति के विरुद्ध है। हे मित्र जब मुझे और आपको सदैव के लिये एक होकर रहना है तो व्यर्थ बेचारे सैनिकों की हिंसा क्यों हो? प्रातः हमारी आपकी वीर परीक्षा हो-जावे देखें कौन बलवान है कौन परीक्षा में उत्तीर्ण होता है? कौन किसको अपने में लीन करता है? प्यारे छत्र-साल! पराधीन क्षत्री, क्षत्री नाम के योग्य नहीं है।

केशवराय का पत्र पाकर अङ्गदराय, बलदिवान, कुंअरसेन इत्यादि मिल कर बैठे और प्रातः के लिये विचार करने लगे। वीर बलदाऊ ने कहा कि छत्रसाल जी आपके बदले मैं केशवराय से लड़ूंगा आप चुप रहिये; परन्तु वीर छत्रसाल ने इस बात को स्वीकार न किया। उन्होंने कहा कि दाऊजी ऐसा करने में अपयश होगा, धर्म भीरुता होगी संसार मुझे कायर कहेगा आप किसी प्रकार की फिकर न कीजिये मैं कल अवश्य उससे मिलूंगा मेरी उसकी बरनी है। अन्तिम प्रार्थना मेरी आपसे यही है कि आप इसी तरह प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहिये प्राण रहते प्रतिज्ञा न छोड़िये।

दूसरे दिन प्रहर रात्रि से वीर छत्रसाल जी स्नान ध्यानादि से निश्चिन्त हुए। उधर फौज में पहिले से खलबली पड़ी हुई थी। निदान सुबह के पांच ५ बजते२ वे ससैन्य रणक्षेत्र को चले, उधर से केशवराय भी अपने पुत्र विक्रमसिंह सहित आया। यदि आप जानना चाहते हैं कि ये दोनों वीर पुरुष वहां पर क्यों आये तो सुनिये

आज वे अपने २ वीरत्व का इमतिहान देने आये हैं। इसीका नाम वीरपरीक्षा है किंतु यह मिडिल इन्टरेंस की परीक्षा नहीं है इसमें फेल होकर फिर कोर्स देखने की आज्ञा नहीं है तथा यह प्रेम परीक्षा भी नहीं है कि इसमें संयोग वियोग शृङ्गार की लहरें आवें इसका कोर्स बड़ा लम्बा चैाड़ा है इसी कोर्स ने क्षत्रियों को सार्वभैामाधिप बनाया, इसी परीक्षा में उत्तीर्ण होकर यवनों ने उतपात मचाया। इसी कोर्स में उत्तीर्ण होकर बृटिश गवर्नमेन्ट सर्वश्रेष्ठ है और हजारों कोस से आकर भारतवर्ष पर शासन करती हुई हमें अनेक प्रकार से सुख दे रही है। इसी कोर्स के। पढ़ कर उत्तीर्ण होना क्षत्रियों का मुख्य धर्म है। देखिये ते। महाशय कैसा विकट कर्म है क्या अब भी क्षत्री क्षत्री कहलाने योग्य हैं कि ऐसा सुअवसर पाकर भी अपने सनातन विद्या की A. B. C. D. भी नहीं पढ़ते। बस इसी परीक्षा के निमित्त दोनों वीर रणभूमि (Examination Hall) में उपस्थित हुए। दोनों के गार्जियन स्वरूप वीर सैनिक गण भी प्रस्तुत थे किंतु किसी को भी वार्ता करने का अधिकार नहीं था। इधर से बीर छत्रसालजी ने घोड़ा फेंका उधर से केशवराय ने और दोनों आमने सामने जुट पड़े, दोनों की आंखें चार होते ही दोनों ने अपनी २ फौज में हुक्म पुकारा कि खबरदार कोई किसी पर वार न करे खड़े तमाशा देखो और हमारे पश्चात इन (एक दूसरे की ओर इशारा करके) का सहारा लेना तुम्हारा कर्तव्य होगा।

इसके पश्चात केशवराय ने कहा भाई वीर छत्रसाल प्रथम वार आप कीजिये देखिये तो आपका शस्त्र दृढ़ है या मेरा वक्षस्थल ? इस पर वीर छत्रसाल जी ने सहज स्वभाव से उत्तर दिया कि मैं आपके यहां आया हुआ हूं प्रथम आप ही को मेरा सत्कार शस्त्र द्वारा करना उचित है और यह भी है कि मेरे वार करने पर आपकी अभिलाषा भरीही रह जावेगी सो आप उस हौंसले को निकाल डालिये।

केशवराय ने (आप हमारे महिमान हैं तो लीजिये टीका करता हूं यों कहकर) भाला मारा और यह तावा फोड़कर वीर छत्रसालजी के वक्षस्थल पर लगा, परंतु इनने बड़ी फुरती से उस (भाले) को निकाल कर फेंक दिया।

अब वीर छत्रसालजी की वारी आई और इन्होंने जो फटकार कर भाला चलाया तो तुरंत केशवराय के कलेजे पार होगया। भाले के लगतेही वह तलवार निकाल कर झपटा। पास आतेही वीर छत्रसालजी ने वरछे की ऐंहु पकड़ कर हिला दिया जिससे वह घोड़े पर से गिरपड़ा और अपना वरछा निकाल लिया। मानों उसकी वीरता वरछा द्वारा निकाल ली थी। चोट वीरछत्रसालजी को भी अधिक लगी थी इसी कारण क्षण मात्र में मूर्छित होकर आप भी धरासाई हुए. निदान इस हेतु दोनों ओर उस समय करुणा रस का ही प्रभाव रहा।

दूसरे दिन वीरछत्रसालजी ने केशवराय के पुत्र विक्रमसिंह को बुला कर आस्वासन दिया और कहा कि बेटा तुम कुछ चिन्ता न करो मुझे केशवराय ही समझो

प्यारे पुत्र ! केशवराय की मृत्यु पर मुझे स्वयं अत्यंत खेद है, मैं जानता था कि वह बीर पुरुष मेरी सहायता करेगा। पर हाय ! दैवेच्छा प्रबल है मुझेही उस बीर क्षत्री का खून करना पड़ा, अब मैं उनके स्थान में तुम्हैं समझता हूं तुम साक्षात मेरे पुत्रवत् हो।

वीर छत्रसाल की मधुर बाणी से विक्रमसिंह का दग्ध हृदय शांति हुआ। वह सेनापति का पद पाकर उसी क्षण से वीर छत्रशाल जी का अनुयायी हुआ।

बीर छत्रसाल घाव लग जाने से बहुत दुखी थे इस कारण बांकी खांन (जो इनका किसी प्रकार मित्र था) की सहरद में ठहरे रहे एक मास में इनका घाव अच्छा हुआ। तब यह एक दिवस दो चार विश्वासी पासवानों को लेकर शिकार खेलने बन के निर्जन प्रांत में निकल गये। इस बात की खबर ग्वालियर के सूबेदार के एक सेनापति सैयद बहादुरखां को लगी। उसने जंगल ही में बीर छत्रसालजी को आघेरा। ऐसे विकट समय में वीर छत्र-सालजी सहजही दो चार यवनों को नष्ठ करके एक पहा-ड़ी के दर्रे की राह से निकल गये। बेचारा सैयद बहादुर खां उनके इस कौशल को देख कर चित्र लिखा सा रह गया और हाथ मीजता अपने घर गया।

बीर छत्रसालजी ने अपने खेमे में आकर उसी समय तैयारी बोल दी और पवांय लूटते हुए धूमघाट पर डेरा जा डाला। इस समाचार को सुन कर किछत्रसालने पवांय को लूटा है, ग्वालियर के सूबेदार को बड़ा क्रोध आया

इसलिए उसने एक उत्तम सेना लेकर बीर छत्रसालजी पर हल्ला बोला। दोनों ओर से खूब लोहा बजा निदान सैयद मुनौवर वीर छत्रसाल जी के सन्मुख न ठहर सका और ससैन्य भाग उठा। वीर छत्रसालजी ने ग्वालियर तक उसका पीछा किया परंतु जब सैयद मुनौवर किले में जा घुसा तब छत्रसालजी ने किले के बाहर से लड़ने में अपने को असमर्थ जान कर शहर में लूट मचा दी। वहां करीब सवा करोड़ रूपया की नगदी और जवाहरात इनके हाथ लगा। वहां से चलकर इन्होंने कटिया के जंगल में डेरा डाला। महम्मद हासिम एक बार हार कर छत्रसालजो को खूनी आंखों से देखता था इसलिये दूसरी बार उत्तम सेना लेकर, कुछ फौज ग्वालियर से लेता हुआ अपने सहायक आनंद राय चौधरी के साथ वीर छात्रसाल पर चढ़ धाया और तीन तुंगो से धावा किया, परंतु वीर छत्रसालजी ने उदंड वायु स्वरूप होकर तीनो दल बद्दलों को छिन्न भिन्न कर दिया। वहां से विजय का पताका उड़ाते हनूटेक पर आये, वहां वीर छत्रसाल जी की तीसरी शादी मोहार के धंधेरे हरोसिंह की बेटी उदेत कुंवरि से हुआ।

अब वीर छत्रसाल जी के नाम का आतंक समस्त बुन्देलखंड में फैल गया इनके शत्रुओं के हृदय में भय का अंकुर अंकुरित हुआ और हितकारी मित्रों का मन प्रफुल्लित हो उठा। वही बांधवगण जो प्रथम मनाने से रूसते और बादशाह के विरुद्ध शस्त्र धारण करने की बात सुन

कर अनखाते थे अब स्वयं बीर छत्रसाल जी की शरण में आने और अपने को इनका सच्चा सौ हृद बांधव जताने लगे। बीर छत्रसालजी पिछली बातों पर तनिक भी ध्यान न देकर सबको यथोचित आदर देते थे।

बीर छत्रसालजी हनूटेक से सीधे मउ को चले आये। यहां सं० १९३४ में एक मील अंतर पर इन्होंने महेवा नाम गांव बसाया। किन्तु यह स्थान संरक्षित न था इस कारण रनवास की रहाइस के लिये इन्होंने पन्ना को आबाद किया और वहां कुछ बीर योधागण छोड़ दिये कि रनवास की रक्षा करें और आप ससैन्य मऊ में आकर रहने लगे।

जबतक बीर छत्रसाल इस प्रपंच में लगे हुए थे तब तक ग्वालियर के सूबेदार सैयद मुनौवरखां ने संम्राट औरंगजेब को विनय पत्र लिखा कि डाकू चंपतराव का पुत्र छत्रसाल बगावत का डंका बजा रहा है और दम पर दम फौजो कुव्वत कोबढ़ाते हुए मुल्क पर ज़ोर जना रहा है। चुनाचे कमतरीन ने चाहा था कि इसे गिरफ्तार करके हुजूर आलीजाह की क़दमबोसी में हाजिर करूं मगर यह न हो सका वह मक्कार काफ़िर राजपूत मेरे चुंगल से निकल गया। आलीजाह! अगर कुछ दिन इसे इसी तरह अज़ादी रही तो वल्लाह यह बड़ा ग़ज़ब ढाहेगा। इस मुल्क के तमाम बुन्देले सरदार सुलतानी इताअत से सर फेरते जाते हैं और इसके साथ होते जाते हैं। लिहाज़ा तावेदार अर्ज़परदाज़ है कि मदत माकूल भेंदे

को दिये जाने का हुक्म सादिर फरमाया जावे।

इस उपरोक्त पत्र को पाकर बीर छत्रसाल जी की बीरता पर औरंगजेब कुढ़ गया। उसकी बुद्धि चक्कर में पड़ गई। वह मनही मन विचारने लगा कि दक्षिण की ओर तो शिवाजी के मारे नाकों दम है, अब दूसरा छत्रसाल पैदा हुआ परवरदिगार तेरी क्या मरज़ी है इस वक्त ये काफिर राजपूत बड़े जोश में हैं क्या मुगल नहीं नहीं मुसल्मानी बादशाहत के खातमें का इलज़ाम और बदनामी का टोकरा मेरे ही मुकद्दर में लिखा है? परन्तु उसने सम्हल कर स्पष्ट में सेनापति को आज्ञा दी कि कए हजार सवार दो हज़ार पैदल व इतास्रत सरहद रनदूला के मय बाईस चुनिंदा सरदारों के छत्रसाल को गिरफतारी के लिये बुन्देलखंड को भेजे जावें।

अब बीर छत्रसालजी निरे बंसीवाले डाकू छत्रसाल नहीं रहे थे। इनके पास भी तीन हज़ार से अधिक साव लशकर जमा था। जब तक यह मऊ वा पन्ना में रनवास की हिफाज़त में लगे थे। तब तक रतनसाह, अमर दीवान, सवलसिंह, केशवराय पड़िहार, धारूसाह प्रमार दिवान दोपचंद बुन्देला, पृथ्वीराज, माधवसिंह, उदयभानु, अमीरसिंह, प्रतापसिंह, राव इन्दमन, उग्रसेन कछवाया, जगतसिंह, सकतसिंह तौर, जामसाह, बखलसिंहधंधेरे, देवदिवांन, भरतसाह, अजीतराय चित्रांगद, जसवंतसिह बलदिवान का पुत्र, राजसिह जयसिंह, यादवराय, करणसिंह, गाजोसाह सिमरा जो

टीकमगढ़रया सतमेह के, जगतसिंह बनाफर, गुमान-सिंह दौवा इत्यादि ७२ सरदार अपनी २ अनी कनी सेना लेकर बीर छत्रसाल जी के साथ होगये थे। इसी से इनके दल बल की वृद्धि और भी होगई और इनके पास एक उत्तम चतुरङ्गनी सेना तैयार होगई। अब इन्हें जंगल पहाड़ों में रहने की अवश्यकता न थी। जहां बीर छत्र-सालजी के डेरे पड़ते वहां को भूमि आनंद मई हो जाती थी। चित्र विचित्र अनेक प्रकार के तंबू तनते, फौजी निशान फहराते, घोड़े हिंन हिनाते, हाथी चिक्कारते और ऊंट बलबलाते थे सायंकाल के समय रोशनचौकी(नौबत) झरती, साथ में ठाकुर देवालय भी था इसलिये धूप दीप नैवेद्य से पूजन होता और शंख झालर की ध्वनि होती थी। तात्पर्य्य यह है कि इस समय बीर छत्रसाल के पास समस्त राजसी सामग्री प्रस्तुत थी किसी वस्तु की त्रुटि नहीं थी परंतु यह अभी राजा महाराज नहीं थे। पाठक महाशय धीर धरिये वह घड़ी भी निकट आई।

बीर छत्रसालजी के दूत जासूस भी इधर उधर सौ पचास कोस की गिर्द ने चक्कर लगाते फिरते थे। एक दूत ने खबर दी कि बादशाह ही सेना आप पर आ रही है। निदान बीरछत्रसालजी ने मउ छोड़ कर दक्षिण को ओर को कूच करदिया और गढ़ा के किले को जहां कुछ बाद-शाही सिपाही रहते थे, अपना करलिया, कारण कि इनके पास तोपें न थीं इसी से इन्हे मउ छोड़ कर इस किले में आना पड़ा। इस समाचार को पाकर रनदूला

और भी आग बबूला हो उठा और डेवढ़े मुकाम से गढ़ा की जानिब दौड़ मचाई। उसी समय ओरछा, सवी, सिरौज, कौंच, धामौनी और चंदेरी के बुंदेले सरदार एक बीर छत्री भाई को अपना शत्रु मान कर सबे शत्रु संम्राट की सेना में जा जुटे।

बीर छत्रसालजी ने आधी सेना सहित बल दिवान को तो किले में रक्खा और आप आधी सेना लेकर बाहर हो रहे। जब शाही फौज वेग से बढ़ती हुई आरही थी उसका एक मुकाम साहगढ़ को नदी में हुआ, जब सब लोग जहां तहां अपने तीन तोफान में लगे थे उसी समय बीर छत्रसालजी ने घाटी पर से गोलो बरसाना आरंभ किया उस समय किसी से कुछ न करते बन पड़ा अनुमान पंचम भाग साही सेन का सत्यानाश हुआ। जब तक वह लोग सम्हल कर घाटो पर चढ़ें तब तक बीर छत्र-साल जंगल में (हिल बिलान) होकर निकल गये। बाद-शाही फौज और आगे बढ़ी परंतु इन्होंने फिर कुछ भी रोकटोक न की जब शाही सेना किले पर आक्रमण करने पर उद्यत हुई तब पीछे से बीर छत्रसालजी ने गोला दागना आरम्भ किया उधर किले पर से आग बरसी दोहरी मार पड़ने से बादशाही सेना केवल चार घंटे से अधिक न ठहर सकी। रनदूला भाग कर सागर की ओर चला गया। इस युद्ध में रनदूला के १० सरदार और ७०० सिपाहो हताहत हुए और बीर छत्रसाल के हाथ १० तोपें लगी।

रनदूला को भगा कर बीरछत्रसाल जी सहित समाज ललितपूर का चक्कर लगाते हुए नरवर में आये। यहां लूट मार करके लौटने वाले थे कि एक दूत ने पता दिया कि दक्षिण से १०० गाड़ो रुपया जवाहिरात से भरी हुई दिल्ली को आ रहीं हैं और केवल ५०० सियाहो साथ में है। इस खबर को पाकर बीर छत्रसाल ने रास्ता जा बांधी और शाहो नजराने की गाड़ियां लूट लीं। रक्षक लोग खाली हाथ शाहो दरबार में जा पुकारे। इनका इज़हार होहो रहा था कि रनदूला की हार का समाचार भी सम्राट के हुजूर में ज़ाहिर हुआ।

सम्राट का एक डाकू के मुकाबिले में अपने ऐसे२ बीर सरदारों को परास्त होते देख औरङ्गजेब को बड़े शोक समुद्र में उसके डूबना पड़ा। उसके मन में नाना प्रकार के संकल्प बिकल्प उत्पन्न होने लगे। वाह उपद्रव में उपद्रव। लीजिये और समाचार मिला कि बहादुरशाह ने बागवत ठानी है जोधपुर के महाजकुमार जसवन्तसिंह जो इनके सहायक हैं। शाहज़ादा बहादुरशाह एक बड़ा लश्कर लिये हुए दक्षिण को जा रहे हैं। तब औरङ्गजैब ने मंत्रियों ने मिल कर सलाह की कि कट्टर रूमियों की फौज भेजी जावे कि पहले छत्रसाल को गिरफ्तार करे और तब दक्षिण की ओर कदम बढ़ाये और कुछ फौज इनकी मदद में पीछे से भेजी जावे।

बसिया के मैदान में रूमी सर्दार और बीर छत्रसाल जी का मुकाबिला हुआ इस बार छः घंटे कठिन संग्राम के

पश्चात बीर छत्रसाल जी बिकट रूमियों से परास्त हुए। और संग्रामभूमि से दो कोस के अंतर पर एक जङ्गल में जा छिपे। मुसलमानी सेना ने इनका पीछा किया किन्तु सघन बन में कुछ चारा न चला इसलिये वह लोग नाके बांध कर बन के बाहरी प्रांत में टिक रहे। अर्ध रात्रि के समय रूमी सरदार बक्काखान की आज्ञानुसार मेगज़ीन खुला (मेगजीन क्या खुला मानों बीर छत्रसाल का भाग्य खुला) और फौज में बारूद गोली बटने लगी इस समय चारों ओर से सिपाही ऊपर तरू पर जुट पड़े। उसी समय छत्रसाल जी और बालदिवान दोनों भाई कृत्रिम स्मश्रु लगाये ठीक मुसलमान कासा भेष बनाये उसी झुंड में आ जुटे और समय पाकर मशाल वाले को ऐसा धक्का मारा कि वह बेचारा मौत का प्यारा मशालची मेगजीन में जा गिरा और आप फुरती से निकल कर चल दिये, मेगज़ीन उड़ते समय जो अद्‌भुत दृश्य उपस्थित हुआ सो आपके मन में झूलही गया होगा और इसी गड़बड़ में बीर छत्रसालजी की सेना विकराल कालरूप से रूमियों पर ऐसी टूटी कि उन्हें माता काहीं दूध याद आया होगा। जिसे जहां पथ मिला सब तीन तेरह होगए। तत्पश्चात् बीर छत्रसाल जिगनी में आये वहां के पड़हार जागीरदार सिंहजू ने इनको आदर पूर्वक लिया और अपनी बेटी "भगवत कुंवरि, नाम से बीर इनको ब्याह दी।

इस प्रकार बीर छत्रसालजी रूमियों की शिकस्त दे

कर फिर मऊ में आए। दो चारही दिन के बाद सँड़वा से इनको लगुन आई। लगुन होजाने पर सब दल वल मऊ में छोड़ कर और केवल ६० सवार लेकर वीर छत्रसालजी दूल्हा बनकर व्याहने चले। जिस समय इनको सँड़वा में भांवरें पड़ रहीथी कि बादशाह के भेजे हुए तहवरखां पठान ने किला जा घेरा और तोप चलाना आरंभ किया। तब छत्रसालजी ने यवन सेनापतिसे कहला भेजा कि आप किला घेरे हुए हैं हम कहीं जा सकतेही नहीं हैं। आप व्यर्थ चूना ईंट पर क्यों मसाला खराव करते हैं। धीर्य्य धरिये भांवरें पड़ जाने बाद हम स्वयं आपके पास हाज़िर होते हैं। तहवरखां ने इस प्रस्ताव को प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार कर लिया और तोप दागना बन्द कर दिया। नैग चार होते २ प्रहर रात्रि होगई, तव वीर छत्रसाल जी ने साथियों सहित साजसामान से दुरुस्त होकर तहवरखां पर गोला उतारना आरम्भ कर दिया। इधर मुसल्मानो सेना में भी खरभर पड़गई। इसी समय आप सव साथियों सहित पिछवाड़े किले की खिड़की के रास्ते चल दिये। मुसल्मानों ने बड़ी देर तक गोला चलाया परन्तु जव किले पर से उसका कुछ भी उत्तर न पाया तो किले में घुस पड़े और वहां पर केवल दीवारों को पाकर हाथ मीजते रह गए।

इस प्रकार धोखा खाये हुए तहवरखां ने दिल्ली में जाकर सब हाल अपना बीता कह सुनाया और औरङ्गजेब को यह भी समझाया कि वह मक्कार काफ़िर इस तरह हाथ

आने का नहीं है। उसे तो खूब लाव लश्कर सजा कर धजी धजी उड़ाना ठीक होगा। निदान इसी विचार से दिल्ली से उत्तमोत्तम ऐयार इस पते पर भेजे गए कि मौका मुनासिब देखकर छत्रसालजी की गिरफ्तारी का उपाय करें।

जेष्ट सुदि में सँड़वा से व्याह करके छत्रसाल जी मऊ में आये। समस्त पावस और आधे दिन शरद ऋतु के उन्होंने मऊ में ज्यों त्यों व्यतीत किये, परन्तु वीर छत्रसालजी की नींद कहां लगती थी इन्हें तो अहिर्निशि यहले, वहले की पड़ी थी। विजयदशमी को अस्त्र शस्त्रों का पूजन करके इन्होंने कालिंजर पर धावा किया। बलदाउ (बलदिवान) ने किला घेरा, और छत्रसालजी अपने मित्र चिन्तामणि कछवाहे पाथरकछार वाले के यहां पहुनई चले गए। अठारह दिन पर्य्यंत खूब गोला चला बुन्देला फौज की बहुत कुछ क्षिति हुई परन्तु बहादुर बल दिवान ने किला न छोड़ा बराबर घेरा डाले पड़ेही रहे। जब रसद की कमी पड़ी तब उन्नीसवें दिन किलेवालों ने आधी राति को किले से निकल कर बुन्देला फौज पर धावा किया। इधर बलदिवान ने भी प्रातःकाल सेही किले पर दो ओर से चढ़ाई करना विचार करके अपने फौज के दो किस्से कर रक्खे थे ज्योंही किले वालों ने फाटक खोला और बाहर आये कि बलदिवान की वह फौज जो किले के पीछे थी वे रोकटोक किले में पैठ गई। फिर क्या था किला बुन्देलों के हाथ लगा और किलेदार करमइलाही दिल्ली की ओर भागा। इस युद्ध में नन्दन

छिपी, कृपाराम चन्देल, कुँवरसेन धँधेरे, बाघराज पड़िहार इत्यादि इनकी ओर के दस सरदार मरे और २७ घायल हुए। मुसल्मानी सेना के ३००० सिपाही हताहत हुए और २२० घायल हुए।

बीर छत्रसालजी ने गढ़ कालिंजर को अपने आधीन करने पश्चात चौबे मानधाता को वहां का किलेदार नियत करके ५०० सिपाहियों के साथ गढ़ रक्षा पर छोड़ा और आप पन्ना होते हुए मऊ में आये। एक दिवस प्रातःकाल बीर छत्रसालजी अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर शिकार खेलने के लिये महलों से निकले कि देखते क्या हैं एक गौर स्वरूप योगी एक तरफ बैठा हुआ है। इन्होंने इस बार तो कुछ न कहा सीधे चले गए दो तीन घण्टे के पश्चात जब वापिस आये तो सीधे योगी राज के पास आकर सष्टांग प्रणाम करके खड़े हो गए। योगी जी के अनुरोध से बैठ गए। कुछ देर दोनों में वार्तालाप हुआ। तत्पश्चात वह महात्मा योगीजी को सन्मान पूर्वक महलों में लिवा लेगए। इन योगी राज महात्मा का नाम प्राणनाथ था। यही प्राणनाथ परिनामी मत के अधिष्ठाता हैं *।

प्राणनाथजी जाम नगर से दक्षिण का पर्य्यटन करते हुए पन्ना में आये थे। यहांपर बीर छत्रसालजी की मझली रानी 'दान कुंवरि' श्रीप्राणनाथ जो की अर्धाङ्गनी बाईजूराज की चेली हो गई थीं। इसीसे बाईजूराज पन्ना में

* प्राणनाथ जी की संक्षिप्त जीवनी परिशिष्ट में लिखी गई है।

रह गईं थीं और केवल प्राणनाथ जी मऊ को गए थे।

मऊ में कुछ दिवस रहने के पश्चात श्रीप्राणनाथ जी की आज्ञानुसार वीर छत्रसालजी पन्ना को आये। वास्तव में प्राणनाथ जी बड़े ही महात्मा थे और इसी कारण वीर छत्रसाल जी उनके ऐसे आज्ञाकारी होगए थे कि जो कुछ प्राणनाथजी कहते थे वही वह करते थे। यहां पन्ना में वीर छत्रसाल जी तो अपने महलों में निवास करते थे और किन्तु प्राणनाथ जी कुंड़िया (नदी) पर रहा करते थे। एक दिन जब वीछत्रसाल जी प्राणनाथ के दर्शनों को आये तो प्राणनाथ जी ने इन्हें चार विचित्र चित्र दिखलाये (१) में दो सुन्दर वालकों मूर्ति (२) रे में उत्तम रत्न रचित भूमि (३) में चार प्रणित कुत्ते (४) में स्वयं वीर छत्रसालजी का चित्र था और वह इस प्रकार से कि वह एक हाथ में नग्न खड्ग लिये, दूसरे में स्वर्ण मुद्रा। यह आश्चर्य जनक चित्र देखकर वीर छत्रसालजी ने विनीत भाव से निवेदन किया कि स्वामी इसका क्या प्रयोजन है सो दास पर दया करके समझाइये।

प्राणनाथजी ने उत्तर दिया कि—प्रथम चित्र में जो तुम यह रत्न मई भूमि देखते हो सो यह भूमि जिसपर हम तुम बैठे हुए हैं समस्त सुन्दर रत्नों की खानि है और आज जितनी भूमि पर तुम्हारा घोड़ा चक्कर लगा आवेगा वहां तुम्हारी ७ पीढ़ी तक हीरा निकलेगा द्वुतिय चित्र तेरी सन्तान का है कि जो तेरी मझली रानी के यह दोनों पुत्र हैं। यह बड़े पितृ भक्त वा धर्मज्ञ होंगे। तृतिय

चित्र तेरो संतान के सात पीढ़ी के पश्चात का है सातवीं पीढ़ी में तेरी संतान ऐसी कुत्सित होगी और जो चतुर्थ चित्र में तू स्वयं अपना चित्र देखता है उसका आशय यह है कि तू शीघ्रही इस भूमि का राजा महाराजा होगा और आं जन्म तू इस प्रकार न्याय करेगा कि कुसूर करनेवाले को खड्ग वाले हाथ से दण्ड देगा और धर्मज्ञ तथा सत्कार्य्य कर्ता मनुष्यों के निमित्त मुद्रा गर्स्तहस्त से सदैव पारितोषक देगा। प्राणनाथ जी के मुख से अपना इस प्रकार भविष्य सुन कर छत्रसालजी ने कहा महाराज आप नित्त मुझे महाराज कहकर संबोधन किया करते हैं इससे मुझे लज्जा होती है क्योंकि मैं इस योग्य नहीं हूं। मैं तो एक निःसहाय तस्कर की तरह दस्यु कर्म कर रहा हूं।

इसपर प्राणनाथजी ने उत्तर दिया—हां छत्रसालजी आप राजा नहीं हैं किन्तु महाराजा हैं आप अवश्य इस योग्य हैं। (धूनी से विभूति उठा कर और तिलक करके) आजही से आपको तिलक हो चुका अब तुम्हें उचित है कि उत्तम सेना सज कर दिग्विजय करो। जो प्रसन्नता पूर्वक तुम्हारी सिबकाई स्वीकार करे उसे पालन करो और जो तुम्हारे सन्मुख आवे उसे शस्त्रबल से अपना करो। ईश्वरेच्छा से—'दोहा' छत्ता तेरे राज्य में धक २ धरनी होय। जित जित घोड़ा मुख करे तित २ फत्ते होय ॥१॥

प्राणनाथजी से बिदा होकर छत्रसाल जी घोड़े पर सवार हुए और उनकी आज्ञानुसार ७ घंटे में १२ कोस का चक्कर लगा कर लौट आए। उसी समय से आज तक

पन्ना में बराबर हीरा पाया जाता है और यह हीरा गोलकुंडा के हीरे से कम नहीं है। यहां पर करीब १२ किस्म का हीरा निकलता है। प्रातःकाल होते ही वीर छत्रसालजी प्राणनाथजी को पन्ना में ही छोड़ कर आप मऊ को चले आये। और यहां से समस्त सैन्य सज कर कार्तिक कृष्ण सप्तमी वि० संवत १९४२ को—प्राणनाथ की प्रेणानुसार दिग्विजय को पधारे।

वीर छत्रसालजी मऊ से सीधे दक्षिण की ओर गए इनकी पहिली चोट सागर के किले पर हुई। तत्पश्चात दमोह धेरी लूट कर डोलची को बरबाद किया और फिर बरहना के राजा को अपने आधीन किया। एरच को लूट कर शहर देहातों में जहां कहीं मुसल्मानी चिन्ह देखते बराबर लूट मार करते। एरच से जाकर हिनौती को फूका और फिर जलालपुर के टुकड़े उड़ाये। नदी वैदवती पार करते समय पठानों ने, जो पहिले से इनके कूच मुक़ाम के ताक में थे आजेड़ा, परन्तु फल यह हुआ कि पठान सरदार जलालखां वीर छत्रसालजी के कैद में पड़ा और फौज भाग कर सैयद लतीफ़ की फ़ौज में जा मिली।

गढ़ ग्वालियर से आकर सैयद लतीफ़ मुकाम जटघड़ी में पड़ा हुआ था। वीर छत्रसाल जी ने इसपर भी एक लतीफा मारा। रात को ऐसा धावा डाला कि किसीसे कुछ भी न करते बन पड़ा। बेचारे लतीफ़ को जान बचा कर दक्षिण की ओर भागना पड़ा। सब साज

सामान जहां का तहां पड़ा रह गया। इस आक्रमण में १०० अरबी घोड़े ७० ऊंट १३ तोपें छत्रसाल जी के हाथ लगीं। यहां से चल कर बांदा की बारी आई। बांदा की प्रजा आपसे बहुत नम्रता पूर्वक मिली इसीसे वे बीर छत्रसाल की चोट से रक्षित रहे। आसपास के लोगों ने कुछ उतपात मचाया परंतु इसका परिणाम भी महाराज से उन दुष्टों ने यथोचित पाया।

जो जहां जैसा तीन तोफान से मिला उसका वैसा सत्कार करते हुए बीर छत्रसाल जो राजगढ़ में आये। परन्तु यहां पर सुना कि तहवरखां को रगों में फिर खून आया है उसे बोरता के जोश ने सताया है, इसलिये उसने आपके मुकाबिले में डंका बजाया है। निदान बीर छत्रसाल जी ने भी पांच कोस आगे बढ़कर उसका मुकाबिला किया। तहवरखां के लिये फिर भी पहिले का सा नतीजा हुआ। इसी अवसर में मेंढकों को जुक़ाम आया मौधा, मुस्करा इत्यादि १८ गांव के जमींदारों ने मिलकर बीर छत्रसालजी के विषम बेग को रोकना चाहा। तिसको यह फल हुआ कि ४०० गवारों के प्राण गए बाकी भाग निकले और गवारों के इस व्यवहार से कुपित होकर बीर छत्रसाल जी ने महोबा, राठ, पँड़वारी इत्यादि को लुटवा कर हर स्थान पर अपना थाना बिठा दिया। जब बुन्देला फौज ने अजनर पर आक्रमण किया तौ फिर से २७ गांव के गवारों ने जुद कर और अपने प्राण गवांना विचार कर छत्रसाल की राह रोकी।

महाराज छत्रसाल ।

भूमिका ?

प्रिय पाठको !

इस पुस्तक की वह भूमिका जिसे मैं ने पुस्तक लिखने के समय लिखा था अथवा जहां से मैं ने इस लेख को आरम्भ किया था, इस समय मुझे अनुपयोगी जँची; अतएव मुझे इस बात का लिखना परम आवश्यक जान पड़ा कि इस पुस्तक सम्बन्धी कुछ विशेष घटनाओं का वर्णन आप के सन्मुख उपस्थित करूं। यद्यपि उन बातों से यहां कुछ विशेष सम्बन्ध नहीं है, परन्तु उनका लेख, जहां तक मैं अनुमान करता हूं, एक अनुपम आनन्द प्रद और संसार चक्र की चाल की सूचना देने वाला होगा इसलिए मैं उसका उल्लेख करना उचित समझता हूं।

१ अप्रेल सन् १९०४ की बात है। मैं श्री श्री दीवान सत्तरजीतके जूदेव—जो कि श्री मान् महाराजाधिराज श्री १०८ छत्र-पुराधिप महाराज के पितृव्य हैं—के यहां बैठा हुआ "छत्रपति महाराज शिवा जी का जीवन चरित्र पढ़ रहा था और पं० रघुवर तिवारी, राधाचरन रावत और कुंवर रघुराज सिंह के साथ चौपड़ खेल रहे थे। बाजी खतम होने पर श्रीमान् दिवान सत्तरजीत जूदेव ने मुझ से कहा कि तुमभी चौपड़ खेलो परन्तु मैं ने इन्कार किया और कहा कि इस समय किताब पढ़ रहा हूं मैं न खेलूंगा। इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि जन्म का खिलवाड़ी आज ऐसा पढ़ने वाले हो गया। भला कहो तो यह कौन सी पुस्तक है? मैंने ज्योंही उक्त पुस्तक का नाम बतलाया कि रघुवर तिवारी कह उठे वाह क्या ही अच्छा होता यदि श्री मान् महाराज छत्रसालजी का जीवनचरित्र भी लिखा जाता। अहा! कैसा वीर पुरुष हो गया है कि जिसका नाम स्मरण करने से ही हृदय में आनन्द का स्रोत प्रवाहित होता है। यह सुनकर मैंने उत्तर दिया कि महाराज का चरित लिख तो मैं सकता हूं किन्तु सामान पूरा होना चाहिए। बस मेरे कहने की देर थी कि श्रीमान् दिवान साहब ने महाराज छत्रसालजी के जीवन चरित्र सम्बन्धी लेख भी मेरे सन्मुख कर रख दिए। साथही जहां तहां लोगों से इस लेख सम्बन्धी कथा वार्ताओं की भी पूछ पाछ की जाने लगी। बस मेरा भी

उत्साह दूना होगया और मैंने भी २० अप्रैल को कलम उठाकर लिखना आरम्भ किया। पुस्तक लिखते २ जिस किसी से मैंने इस विषय की बातें की सबने प्रसन्न हो कर मेरे उत्साह को बढ़ाया। जब मैंने इस बात की चरचा अपने मास्टर साहब (माननीय गुरु) लाला भगवानदीन से की तो पहले तो उन्हों ने मुझे बागड़ कह के दुतकार दिया, परन्तु जब मैंने पुस्तक पूरी होजाने पर उन्हें दिखाई तब उन्हों ने बड़ा आनंद प्रगट करते हुए इस पुस्तक का वाक्य संशोधन किया और अन्त में निम्नलिखित टीप्पणी भी लिख दी।

I went through this book very attentively and am not a little proud of the young writer, who is one of my pupiles. The book is good as regards Style of writing and arrengments of facts. L. BHAGWAN DIN 2nd master.
M. H. S. Chhatarpur.

यद्यपि इस पुस्तक का शीर्षक मैं ने जीवन चरित्र करके लिखा है परन्तु इस की लेख प्रणाली ऐसी विलक्षण है कि इस समय मैं स्वयं इस बात का निर्णय नहीं कर सकता कि यह पुस्तक किस श्रेणी के लेखों में परगणित करने योग्य है। इस का कारण यह है कि जिस समय मैंने यह लेख आरम्भ किया था उस समयं तक यद्यपि मैं ने लगभग हिन्दी के सब उपन्यास और यथाप्राप्य पौराणिक और ऐतिहासिक ग्रन्थ देखे थे; किन्तु इस बात का मुझे कदापि अनुभव न था कि किस लेख को किस रीति से लिखना चाहिए। यह पुस्तक वास्तव में जीवन चरित्र ही है—इसके आदि अन्त में इतिहास है, इसकी लेखप्रणाली उपन्यासिक ढंग की है—इस में यथा समय मेरे मनोगत भावों का नाम चित्र भी है—साथ ही इसके, सब से विशेष बात तो यह है कि मेरा मन अपने देश के अविद्वान और काहिल भाई बन्धु और स्वार्थपर कर्मचारियों से चिढ़ा हुआ है क्योंकि कर्मचारियों की स्वार्थपरता से पतित हुए पन्ना और विजावर के राज्यों की दशा मैं स्वयं अपनी आखों से देख चुका हूं। कहीं कहीं तो यह हाल है कि ठाकुर साहब बीस हजार के जागीरदार हैं परन्तु घर में भूंजी भांग नहीं है। और उनके कामदार लोग हजारों के भले आदमी हैं। इसी से मैं ने यथासमय उचित रीति से इन दोनों

पर भी कटाक्ष करने में कसर नहीं रक्खी । अतएव मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि जो किंचित वाक्य राज्यकर्म्मचारियों के सम्बन्ध में मैं ने अनुमान से लिखे थे वे प्रत्येक्ष में सत्य ही प्रमाणित हुए ।

यद्यपि मैं चाहता तो इस लेख को इस समय सर्वाङ्ग सुन्दर जीवन चरित्र की प्रणाली में परिणित कर देता, परंतु ऐसा करना मुझे लाभकारी नहीं मालूम हुआ क्योंकि जिस लेख के पीछे घरबार छूटा, ! लंगोटिया यार भी छूटे ! हृदय सर्बस्व प्राणप्रिय जननी जनमभूमी से भी विछोह हुआ। भाई बिरादर से भी सम्बंध टूटा अब उस लेख को क्या पलटें ! बस मेरे बिचार से मर्द का तो यही काम है "कि दोहा—गहीं टेक छूटै नहीं, कोटिन करो उपाय ।
* हाड़िल धर पग ना धरै, उड़त फिरत मर जाय ॥"

यदि मैं इसी पुस्तक को इस समय लिखना आरम्भ करता तो यह सम्पूर्ण प्रस्तुत लेख उस पुस्तक की प्रस्तावना मात्र होता, परंतु ऐसा न करने का एक कारण और भी है कि मेरे या पाठकों के सन्मुख इस बागड़ लेखक के प्रथम लेख का एक नमूना भी तो प्रस्तुत रहेगा ।

जिन महाशयों ने मुझे इस पुस्तक के लिखने में उत्साह दिलाया अथवा अन्य प्रकार की सहायता की मैं उन्हें भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता । यहां यह भी सूचित कर देना उचित समझता हूं कि अन्य लोग तो मेरी मित्रमंडली के हैं परंतु श्री कमानियर उदयाजीत सूदेव निवारी वाले मेरे गुरुजनों में से हैं । मैं आप के साथ साथ अपनी पांच वर्ष की अवस्था से बारह वर्स की अवस्था लौं रहा । उनकी और नंदलाल बाबा वैद्य की—जिनकी कि उस समय १०० वर्ष की अवस्था थी—दार्शनिक शिक्षा का मुझपर विशेष प्रभाव पड़ा है । मैं ने उन लोगों से जोकुछ सीखा अब उसके परिष्कृत होने का समय आया है । यदि किसी कारण वश मैं अब भी अपने को किसी उत्तम मार्ग पर न लासकूं तो यह मेरा ही

---

* हाड़िल एक पंछी का नाम है। वह कभी पृथ्वी पर पैर नहीं रखता, न जमीन को छूता है। उस के पैरों में सदैव लकड़ी दबी रहती है ता कि यदि धोखे से भी वह जमीन पर गिरे तो उसका पैर जमीन पर न छूने पावे ।

दुर्भाग्यजनित आलस्य कहा जा सकता है न कि उन मेरे सच्चे शुभचिंतक गुरुजनों की शीक्षा का दोष।

मोटी मित्र मंडली के सहायक सदस्य श्री श्री कुंवर जंगीराजा जूदेव सहनियां वाले, राधा चरन रावत और रघुवर तिवारी मउ के और कुंवर रघुराज सिंह गुलगंज के हैं।

मैंने इस लेख के टूटे फूटे वाक्यों में मनुष्य की आत्म निर्भता और कर्तव्य-कार्य्य-परता का विशेष ध्यान रक्खा है। अस्तु इस पुस्तक को पढ़कर यदि किसी एक भी पाठक के हृदय में मेरा वास्तविक मनोगत सिद्धान्त जंच जाय और वह अपने सच्चे सुधार में तत्पर हो जाय तो मैं अपने इस परिश्रम को कृतकार्य्य समझूं गा। मैं नहीं जानता कि इस लेख को लिखने के लिये मैंने कैसी घड़ी में कलम उठाया था कि जिससे मेरी जीवन प्रणाली में सहसा आकाश पाताल का अंतर पड़ गया। मुझे स्वप्न में भी इस बात का ध्यान नहीं था कि मैं राज्यकीय दासत्व के बंधन से मुक्त हो कर अपने जीवन को स्वावलंबी बना सकूंगा। परंतु इस लेख के लिखने ने वही कर दिखाया। सम्भव है कि पाठकों पर भी यदि सेर नहीं तो छटांक भर असर तो जरूर ही पड़ेगा।

निवेदन।

यद्यपि मैं ने उस समय के तजरुबे के अनुसार किसी भी बात के लिखने में कसर नहीं की। ऐतिहासिक बातों को वशभर यथा स्थान उचित समावेश करके लिखा है। परंतु सम्भव है कि तब भी बहुत सी भूलें रह गई हों; इसलिये मेरा बुन्देलखण्ड के निवासी तथा लेख के नायक से संबंध रखने वाले अन्य पाठकों से प्रार्थना है कि यदि मुझ से कोई भूलें हो गई हों और वे जानते हों तो वे कृपाकर पत्रद्वारा उनकी सूचना दें। तो इस पुस्तक के दूसरे संस्करण में ऐसी भूलों का यथा आवश्यक सुधार हो जाने से बहुत ही अच्छा होगा। जो महाशय इस भूल सुधार में सहायता देंगे मैं उन की कृपा और परिश्रम का परम अनुग्रहित होऊंगा।

अनन्त चतुर्दशी
संवत १९८४, काशी } कुंवर कन्हैयाजू

बुन्देलखण्ड केशरी

दूसरा भाग।

फिर भी परिणाम पहिले का सा हुआ। पर यहां उतना खून खराबा नहीं हुआ। ज्यों हीं इन का मुखिया कृपाराम बनाफर चौधरी मारा गया और भगवानदास बगसी घायल हुआ सब गँवार भेड़ की तरह भाग उठे।

बीर छत्रसाल जी दक्षिण सागर से यहां तक विजय पताका उड़ा चुके थे। अब उन्होंने सेंगर(१)घार पर दृष्टि डाली। यहां के एक सरदार दुरजन सिंह पड़िहार ने बीर छत्रसाल जी की शरण ली; इस हेतु उस पर रक्षा रही। और भी जो लोग दुरजन सिंह की तरह इन के शरण में आये, कुशल से रहे, बाकी लोग तलवार की धार और भाले की नोंक से सीधे किए गए। सेंगर घार को अपने आधीन कर के कालपी पर, जहां कि उस वक्त बादशाही थाना था, आक्रमण किया निदान यहां के थानेदार ने खून खराबी में कुछ फायदा न देखकर सहज ही चौथ देना स्वीकार कर लिया और हाल में कुछ नकदी देकर सर से बला टालना चाही; परन्तु यह विचार उस का सिद्धि न हुआ। बीर छत्रसाल जी ने चौथ का रुपया भी ले लिया और किले पर अपना अधिकार कर

(१) कालपी के आस पास सेंगर राजपूत अधिक रहते हैं इस लिये उस स्थान को सेंगर घार कहते हैं।

के उत्तमसिंह धँधेरे सरदार को अपनी ओर से वहां का थानेदार नियत कर दिया।

जब कि वीर छत्रसाल जी दिग्विजय में लगे थे तिस के तीन वर्ष पेश्तर संवत् १७३९ में औरछा अधिपति महाराज सुजान सिंह का परलोक वास हो गया था। और इन के भाई राजा इन्द्रमन गद्दी पर बैठे, किन्तु इन की आयु उस समय केवल १५ वर्ष की थी इस लिये राज्य का पूरा अधिकार सब प्रकार राज्य के कर्मचारियों को था, वे लोग नाम मात्र के लिये राजा सुजानसिंह की माता मही गणेश कुंवरि, "जो उस समय ९० वर्ष की थीं" से पूछ खूट कर लेते थे। इसी लिये मंत्री महाशय ने छत्रसाल जी से कोई प्रयोजन न रक्खा था। वल्कि सुनते हैं कि उन लोगोंने सम्राट औरंगजेब से यह भी प्रतिज्ञा कर दी थी कि वे छत्रसाल को गिरफ़ार करेंगे।

यह कुत्सित समाचार जब बीर छत्रसाल जी के कर्ण गोचर हुआ तो वह कालपी से सीधे औरछे की ओर चल पड़े। रास्ते में आकर के बड़ी रुरू अर्थात् भोज की मउ को लूटा और यहां से बराबर दो दिन के धावा में औरछे पर आक्रमण करने का परामर्ष किया। जब यहां से चलकर धसान नदी पार कर रहे थे कि उस ओर से रानी गणेश कुंवरि पीनस में सवार हो कर केवल ५० सिपाहियों के साथ यहां आ पहुंचीं। उन्होंने बीच नदी में अपनी पीनस रखवा कर छत्रसाल जी को अपने पास बुलाया और कहा "कि, बेटा कहां जाते हो मैं तो तुम्हारे पास आई हूं। तुम मुझ वृद्ध माता पर क्या आक्रमण करते हो, मेरा कहा

मानो, यहीं से हमारी तुम्हारी राज्य की हद्द हो जावे अर्थात् नदी उस पार आप राज्य करो और इस पार की भूमि अपने भाई को रहने दो। आप आये सो भले आये, चलो घर है जब तक तुम्हारी इच्छा हो प्रसन्नता पूर्वक रहो"।

महारानी गणेश कुंवरि की आज्ञानुसार बीरछत्रसाल जी दो दिन औरछे में रहे तीसरे दिन वहां से चल कर तीन दिन में ग्वालियर पहुंचे। विचारे तहवरखां की तो पहिले ही दोवार दशा हो चुकी थी इस लिये उसने चुपके से २००००) देकर अपने रैयत और सिपाह को बचाया। इसी प्रकार बीर छत्रसाल लूटमार करते सहस्त्रो यवनों की रूहें क्यामत तक सुलाते हुए चंबल नदी तक पहुंच गये, यहां से एक पत्र भेलसा के किलेदार को लिख भेजा कि या तो नज़राना भेज कर हमें चौथ देना मंजूर करो या अपने किस्मत का लिखा भोग करो। परन्तु इस का उसने कुछ जबाब भी न दिया। इस लिये बीर छत्रसाल जी को भेलसा के किले पर आक्रमण करने के लिये फिर भी दक्षिण की ओर जाना पड़ा। वे दस दिन में बराबर रात दिन चल कर भेलसा जा पहुंचे और खड़ी दम किला खाली करा लिया इस बात से उज्जैन तक छत्रसाल जी की धांक बंध गई। बल्कि देवगढ़ का किलेदार भी शङ्का खागया। परन्तु छत्रसाल जी आगे न बढ़े, न जाने क्यों।

ग्वालियर के सूबेदार तहवरखां ने यद्यपि चौथ देना स्वीकार कर लिया था और नजराना भी दिया था, परन्तु केवल नीति अनुसार। उसने छत्रसाल जी के पीठ फेरते ही दिल्ली को मदत के लिये शुतुरसवार रवाना किया। इधर

यह सवार दिल्ली पहुंचा उधर कालपी का किलेदार भी शाही दरबार में जा पुकारा। तब औरंगजेबने एक नामी सरदार अनवरखां को भेजा। अनवरखां ने आगे आकर बीर छत्रसाल जी का भेलसा से मउ आने का रास्ता रोक कर डेरा डार दिया।

अनवरखां के ऐयार दूत इधर उधर घूमने लगे, दो तीन दिन बड़ी चौकसी रही। अब तक कुछ खबर न मिली तो मुसलमान सेना की तबियत जरा बहाल हुई। इधर रास्ते की थकावट उधर दुश्मन का खौफ दोनों कम हुए और ऐयाश मुसलमान अपने गुलचर्रों में डटे। दिन भर सोते रहते रात्रि को शराब के प्याले चलते और खूब तबला ठनकता था। यहां पर पांचवे दिन की रात्रि को जब कि सब मुस्मान योधागण तीसमारखांपन की बातें उड़ा रहे थे, शराब का प्याला मु. वातिर चल रहा था, कोई कहता जी "छत्रसाल नाचीज़ के लिये इस कदर धूम मच रही है" दूसरा कहता जनाब हम लोगों के सामने वह है ही क्या" एक भुनगा है। तीसरा कहता अगर इस वक्त होता तो मैं उस की हड्डी चूर २ कर देता, चौथा कहता-"शैर-शीशे में मय है मय में नशा में नशे में हूं"। और पांचवी रंडी मन में सब को बेवकूफ नालायक पाजी कहती हुई ऊपर से हंस्ते मुह गाना गा रही थी।

"तौके गुल्कसीदम्" वेश्या का कहना था, कि उसी दम दस की दम में सब रंग दरहम वरहम हो गया। हटात् एक पचीस शस्त्रधारी हाथ में नंगे खड्ग लिये हुए मारो पकड़ो का शब्द करते यवन रंग स्थल में आपहुंचे। यह विकट

दृश्य देख कर भडुए लोग तो दुज़ानू होकर बैठ गये और हजूर हम लोगों की जान माफ की जावे हम तो हजूर के गुलाम खादिम हैं कहते हुए पैर पड़ने लगे। उधर कई मुस्लमानों के सर से धड़ अलग हो गये। अनवरखां के ऊपर सवारी का पेंच गांस कर बालदिवान ने उसी की पगड़ी से उसकी मुस्के बांध लीं इस के अतिरिक्त और समस्त मुस्लमान यम लोक को भेजे गये। केवल यह नट समाज स-कुशल रही। वह इस प्रकार कि जब वे सिपाही लोग भीतर खेमें के आए और तलवार चलने लगी तब एक वीर युवाने, जिसका सांवला सारंग, कमल नेत्र, अरुण विद्रुम समान ओष्ट साक्षात नायक का आदर्श चिन्ह थे और लम्बी मूछ कानों को टकराती हुई उसके वीरता का परिचय दे रही थी, इस रंडी का हाथ पकड़ कर अभय दान दिया और चारों ओर विद्यु-तवत चमकती हुई असिधाराओं से इस नट समाज के प्राण बचाये। किंचितकाल के उपरान्त वेश्या और अनवरखां को दस सिपाही लेकर एक तरफ गये और यहां पर खूब लोहा बरसने लगा।

आठ दिवस पर्य्यंत वीर छत्रसाल का बन्दी रह कर एक लक्ष मुद्रा देने से, अनवरखां ने छुट्टी पाई, और इस के साथही वेश्या को भी छुट्टी दी गई; परन्तु उसने अर्ज़ किया कि आज रात्रि को मेरा मुजरा हो जावे तब मैं प्रातः काल चली जाऊंगी। वीर छत्रसाल जी ने उस की प्रार्थना स्वीकार की, दूसरे दिन जब वेश्या दरबार में आई तो वीर छत्रसाल को देखते ही पहिचान गई कि मेरा हाथ पकड़ने वाला यही तो है। उक्त वेश्या ने दरबार में बड़े ही हाव भाव और कटाक्ष पूर्ण अदाओं से नृत्य गान करके वीर छत्रसाल जी के अचंचल

चित्त को आकर्षित करना चाहा । किन्तु उस का यह विचार व्यर्थ हुआ । छत्रसाल जी उस की तरफ किसी कलुषित दृष्टि से देखा भी नहीं । अस्तु गान वाद्य बंद हो जाने पर उस ने छत्रसाल जी के पैरों पर गिर कर स्वयं प्रार्थना की कि अब मैं आप के चरण छोड़ कर अन्यत्र नहीं जाना चाहती ।

तब से महाराज ने उसे अपनी सेवा में रक्खा, इस से एक पुत्र का नाम शमशेर बहादुर था कि जिसे आप महाराज की पुत्र गणना में देखेंगे और कन्या का नाम मस्तानी था मस्तानी को महाराज ने वाजीराव पेशवा पूना वालों को दिया था जिसकी संतान में बान्दा के नवाब हैं । यह (रंडी) वेश्या पञ्जाबी थी जिस समय यह वीर छत्रसाल जी के शरण आई इस की आयु १८ वर्ष की थी, मऊ के महलों के दाहने तरफ अब तक इस का मकान बना हुआ है । यह प्रेम कहानी युद्ध काण्ड में शोभा नहीं देती इस हेतु इस का विस्तार न करके अब फिर वहीं लोहे के झार की वार्ता की जाती है ।

जब अनवरखां की वीरता का समाचार सम्राट के कर्ण गोचर हुआ तब उसने कुपित होकर अपने सब दरबारी मुसाहब सरदारों को हुक्म सुनाया कि जो छत्रसाल बुन्देला को गिरफ़ार करेगा वह बहुत इनाम पावेगा, बल्कि उस का फतह किया हुआ सब मुल्क वह जागीर में पावेगा। बादशाह से इस प्रकार आज्ञा पाकर एक सरदार ने जिस का नाम सुदूरुद्दीन था और जो अपने को फन अयारी में बड़ा होशयार, फन सिपाहगिरी में बहुत मज़बूत चालाक और फने जंग में निहायत अक़्लमन्द समझता था खड़े होकर अर्ज किया कि गुलाम इस काम के लिये अगर हुक्म पावे तो कमतरीन तहदिल से बजा

लावे। सम्राट तो यह चाहते ही थे उन्होंने फौरन उसे भेलसा की सूबेदारी का परवाना दिलाया और चलतीवार इस तरह से समझाया। कि पहले छत्रसाल के पास यों कहला भेजना कि शहंशाह औरंगजेब आलमगीर तुम से बहुत कुछ मोहब्बत रखते हैं और जो अब तक तुमने हद्द सुलतानी में लूट मार की और बन्दगान अल्लाह का खून खराब किया वह सब माफ हो सकता है, लिहाज़ा तुम्हें चाहिये कि दरबार शाही में हाजिर होकर अपने कुसूर की माफी मांगो और सरकारी खादिम बनकर अपना मर्तबा बलन्द करो मुल्क में शुहरत कमाओ। वरना बरखिलाफ इस के करने में तुम्हारा भला न होगा, मौक़ा अच्छा है, अगर बन पड़े तो अपना मुक़द्दर आजमाओ और बादशाह की फर्माबरदारी बजाओ। इस पर भी न माने तो जो कुछ तुम से बन पड़े करना और उस के कुसूर की सजा उसे देना।

जनाब मन मुद्दरुद्दीन साहब बहादुर फर्मान शाही ले कर भेलसा को आये किला तो छत्रसाल जी के हाथ में था ही इस लिये बाहर ठहरे और अपना विश्वास पात्र एक ऐयार सिपाही बीर छत्रसाल जी के पास मुआफिक हुक्मशाही के आगाही के लिये भेजा। मुद्दरुद्दीन के इस दूत ने वीर छत्रसाल के दरबार में आकर बड़े लल्लोपत्तो से बातें करना आरम्भ की। "पाठक महाशय यदि आप से किसी लखनौवे से परामर्ष हुआ है तो बस वही तो चापलूसी है"। तत्पश्चात उसने ऐयारी का लटका छेड़कर कहा हुजूर। मिर्जा साहब बड़े बहादुर हैं जिस वक्त आप साहजहानाबाद के सूबेदार थे उस तरफ के बड़े २ कट्टर सरदारों को छकाया है आप को बड़ी खुशनसीबी

है, कि वह इस तरह आप से मुलामियत व मेहरबानी से पेश आये हैं और अब आप को चाहिये कि आप उन के गजब से बचकर या तो उन की ख़िदमत मञ्जूर कीजिये या यहांसे चले जाइये ताकि मिर्जा साहब को आप की शिफारिश दर्बार शाही में करने का मौका मिले। मिर्जा साहब के दूत की इस प्रकार वार्ता सुनकर वीर छत्रसाल जी ने उत्तर दिया कि "सत्य है, तुम्हारे मिर्जा साहब एसे ही बली होंगे हम को इस से क्या, चाहे वह बीर हों वा कादर, जब वह परिश्रम कर के यहां आये हैं तो कृपा करके हमारा नजराना और मुल्क की चौथ देते जावें फिर वह जो कहेंगे हम करेंगे और तब उन को भी अधिकार है कि सम्राट के निकट जाकर चाहे हमारी प्रशंसा करें या निन्दा। सुनो हमारी सत्य प्रशंसा इसी में है कि मिर्जा से दण्ड लेकर छोड़ें और तभी उन्हें मेरी प्रशंसा करने का उत्तम समय हांथ आवेगा। अरे मूर्ख भागने में भी प्रशंसा होती है, क्षत्रियों की प्रशंसा है शत्रु के भगाने में अपने शत्रु के हस्ते मुख से अपनी प्रशंसा करना नहीं चाहता, शत्रु को रुला २ कर प्रशंसा करना छत्रियों का धर्म है मिर्जा को सम्राट का भरोसा है, मुझे ईश्वर और अपने बाहु बल का जा यही कह देना अपने कादर मिर्जा से।

मिर्जा का दूत छत्रसाल जी से निपट नीरस उत्तर पाकर निराश हो कर मिर्जा के पास गया। उसने छत्रपाल जी का कथन ज्यों का त्यों कह सुनाया और यह भी कह उठा कि हुजूर इस बला को चौथ देकर टाल देना भला है न जाने ख़ुदा को क्या मञ्जूर हो। अपने दूत की इस प्रकार कादरता मई वार्ता सुनकर मिर्जा सदूरुद्दीन कुपित होकर बोला कि

अबे सुअर चुप रह! ऐसा करके शाही दरवार में क्या मुंह दिखाऊंगा। लानत एसी ज़िन्दगी पर कि दुश्मन से डर कर भागे। एसा कह कर उसने उसी समय सेना सजने की आज्ञा दी और शपथ की कि आज तभी खाना खाऊंगा जब छत्रसाल को गिरफ़ार कर लाऊंगा। इधर आप जानते ही हैं कि दोपहर का वक्त था सब बीर हिन्दू लोग स्नान ध्यान पूजन, पाठ भोजन शयन में लगे थे। हटात फड़ाफड़ बन्दूक और तोपों की आवाज़ें सुन कर बेचारे रोटी खाने के स्थान में गोली खाने को उद्यत हुए। किले में रसद नहीं थी इस लिये बलदिवान ने वहां घिरा रहना उचित न जान कर बुन्देला फ़ौज को मैदान में सामने लड़ने की आज्ञा दी। दोनों दलों में खूब मार मची रही शायङ्काल के समय बुन्देला फौज की पराजय हुई मुस्लमानों की जै हुई॥

प्रातः काल होते ही फिर युद्ध आरंभ हुआ। अब की बार मुस्लमानों ने दो ओर से आक्रमण किया परन्तु पीछे की ओर पहाड़ी सिलसिला खाली छोड़ दिया। निदान बुन्देला फ़ौज जङ्गल में जा घुसी। दोनों मुस्लमानी दलों से इस धोखे में कि यही बुन्देला फ़ौज है दो चार गुराव तोपें भी चल गईं। जब आपस में निवटेरा करने को दोनों दल मिले तो बीर छत्रसाल जी नङ्गी तलवारें लिये जङ्गल से निकल पड़े। अब की बार दोनों ओर के बीर सिपाही खूब ही दत्तचित होकर लड़े। समस्त रण भूमि में जहां तहां लोथें नजर आती थीं। और नदी के जलके समान रक्त प्रवाहित हो रहा था। इसबार बीरछत्रसाल जी की ओर के नारायणदास, अजीत मल सेंगर, बालकृष्ण बघेला, गङ्गाराम, मेघराज पड़िहार

अदि सिपाही खेत रहे और फिर भी ऐसे लक्षण दीखने लगे कि शायद मुस्लमानों के हाथ खेत रहे। परन्तु "मरता क्या न करता" बीर छत्रसाल वा बलदिवान दोनों ने अपने घोड़े आगे बढ़ा दिये और शत्रु दल को काई सी फाड़ते मनीदास को धर दबाया और उस का सिर काट लिया। बस उस के मरते ही यवन सेना के पैर उखड़ गये। यह आपत्ति देख कर मिर्ज़ा साहब झट भागतों के अगुवा बन गये, परंतु भाग कर जाते कहां, इतनी खून खराबी तो आपही की दम पर हुई थी, अस्तु उसे विबश होकर बुन्देलों का कैदी होना पड़ा और तब इन्हें भी इस मसल पर विश्वास हो गया कि "सौ डण्डी एक बुन्देल खण्डी" लाचार मिर्ज़ा साहब ने चौथ दी और कुछ और भी नज़राना देकर मीठी २ बातों से बीर छत्रसाल जी को प्रसन्न कर के अपने प्राण बचाए॥

मिर्ज़ा साहब की खातिर तवाज़ो कर के बीर छत्रसाल जी फिर जिसी रास्ते गये थे उसी रास्ते लौट पड़े और विजय किये हुए देशों में होते हुए प्रजा की कुशल प्रश्न पूछते, इनाम दस्तूर देते, टीका नज़राना लेते, स्वामी कामतानाथ के दर्शनों की अभिलाषा से चित्रकूट की ओर पधारे। हां यह स्मरण रहे कि इनके जासूस चारों ओर दो चार मञ्ज़िल के फासले पर अगाऊ चला करते थे। इन्हें बांदा में ख़बर मिली कि कामतानाथ जी के इसी नाके पर हमीदखां पठान पड़ा हुआ है और चित्रकूट बासी साधुओं को कष्ट दे रहा है। इस समाचार को सुन कर बलदिवान ने ५०० चुनिन्दा असारोही लेकर बांदा से धावा किया और ठीक अर्ध रात्रि पर हमीद खां को जा घेरा। बेचारा हमीद साथियों सहित प्राण बचा

कर भागा उसका सब साज सामान बुन्देलों के हाथ लगा। क्रमशः सब लाव लश्कर चित्रकूट में आ गया। यहां पर छत्रसाल जी ४ दिन पर्य्यन्त रहे और नगर भेज दिया। यहां से उन्होंने पन्ना जाने का विचार बांधा इतने में खबर मिली कि भगोड़े हमीदखां ने महोबे के जमीदारों को भड़काया है कि तुम छत्रसाल को अमल न देना, हम तुम्हारी मदद पर हैं। निदान छत्रसाल जी ने पन्ना तक जाकर फिर बार बार फौज को तकलीफ देना उचित न जाना इस लिये उन्हों ने उसी वक्त महोबे की ओर कूच किया। बुन्देला फौज का आना सुन कर महोबे के जमीदार भाग गये परंतु अन्य दस पांच गांव के गवांर सवर लट्ठोंने जुटकर मुकाम बरहटा में हल्ला मचाया, हमीद भी इन के साथ में था, बीर छत्रसाल जी की आज्ञानुसार कुंवर सेन धँधेरे ने जाकर सब को मार भगाया। यद्यपि दीन प्रजा के सत्यानाश करने में छत्रसाल जी की रुचि न थी परंतु क्या करते एसा न करने से सब काम बिगड़ता था। नीति की आज्ञा है कि शठं प्रति शठं कुर्य्यात्'। यहीं (महोबे) से एक फौज देवगढ़ को भेजी यहां के किले वालोंने तीन दिन तक तो खूब वार बचाये परंतु अंत में बीर छत्रसाल जी की ही शरण लेने में उन का हित हुआ। तिस पर भी यहां शान्ति के लक्षण न दृष्टि पढ़े इस हेतु फिर भी एकबार नरसिंहगढ़, देवगढ़, कौंच कालपी, पर आक्रमण करना पड़ा यहां से इनकी सेनाने कोटला पर आक्रमण किया यहां का किलेदार सैयद लतीफ़ था इसने दो मास पर्य्यन्त खूब सामना किया परंतु जब गोली बारूद खाना खुराक सब चुक गया भूखों मरने की नौबत आ गई तब उसने विवश हो

कर छत्रसाल जी से संधि की और १००००० एक लक्ष मुद्रा देकर अपने अमूल्य प्राण रत्नों की रक्षा की ।

मिर्जा सुदूरुद्दीन के परास्त होने का समाचार सुनकर सम्राट औरंगज़ेब को बड़ा आश्चर्य और क्रोध हुआ और खास दिल्ली के हाज़रीन सेनापति अबदुलसमद को बीर छत्रसाल के दमन करने की आज्ञा दी । सम्राट की आज्ञा पाकर अबदुल समद बड़े गाजे बाजे से ३०००० तीस हज़ार प्रचण्ड सेना लेकर बुन्देलखण्ड में आया और मौधा के मुकाम पर विश्राम किया । बीर छत्रसाल जी को इन महाशय के आगमन की सूचना प्रथम ही से हो चुकी थी । निदान बीर छत्रसाल जी भी अपनी बीर सेना लेकर अबदुलसमद की सेना से दो कोस के अन्तर पर आ टिके । दूत द्वारा दोनों ओर से युद्ध की तिथि वार का निश्चय हुआ ॥

आज बसन्त ऋतु, चैत्र सुदि ५ गुरवार है । सुन्दर शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु बह कर प्रत्येक श्रेणी के मनुष्यों का मन मुग्ध कर रही है । इसी मन्द २ वायु के साथ गुलाब, बेला, चम्पा इत्यादि पुष्पों की सुगन्धि कामी जनों के निकट जा कर तनिक और सो लो, यों बह रही है । और जड़ चैतन्य सब को आनन्द दे रही है। बेचारे कृषिकर्ताओं अपने किसानी के काम में दिन रात्रि सब को बराबर जानते हैं तुम्हारे संसार के प्रपञ्च से उन्हें मतलब ही क्या है । यही उत्तम समीर बन उपबनों से झुण्ड के झुण्ड मिलकर सुन्दर चिड़ियों के चुह-चुहाहट को अपना साक्षी बनाकर मौधा के मैदान में जाकर दोनों दल के बीरों की नींद को मार कर हटाने लगी । मानों वायु के सनसनाटे में भी आज यह शब्द होता था 'उठो

आज युद्ध तिथि है, इसी शब्द के आशय पर अपने २ भाव के अनुसार भिन्न २ विचारों के चित्र खींच गये। बीर पुरुषों को यह शब्द सुनकर साक्षात स्वर्ग प्राप्त होने का सा सुख होता था। बेचारे कायर अपने प्राण रक्षा के निमित्त उपाय सोचने में मुग्ध थे इसी अवसर पर तनिक भांड़ भगतियों की दशा सुनने योग्य है। कहिये तो सुनाऊ ?।

इन लोगों की गोष्टी शिविर के बाहरी प्रान्त में लगी हुई है। कोई कहता लाहोलबला ऐसे कार सरकार पर, अजी मुफ़ भेड़ बकरी की माफ़िक कटना पड़ता है। मुए यहां से तो बड़े एंड़ते हुए हथयार बांध कर जाते हैं वहां लगी तलवार या किसी की गोली ने सन्देसा सा कह दिया कि धूर चाटते रह गये तोबा ऐसी सिपाहगीरी पर। दूसुरा कहता हैं बे नालायक शुहरत केलिए लड़ते हैं। क्या करें एसी शोहरत और नाम का आप मरे जग डूबा। तीसरा कहता यार हम लोग मज़े में हैं न किसी के तीन में न तेरः में जो जीतेगा उसीके सामने हुजूर २ कह कर सलाम करेंगे दो फिरकी लगायेंगे हुवा सुनेगा सुनेगा वरना कहीं अंत कमा खांवेंगे। हमे क्या राज्य रहे या डूबे। चौथा कहता है अजी यह कोई बस्ल है भले मानसें की लड़ाई होती है मुंह की किसी ने एक कहा आपने दो सुनाईं इसी पर भी न माना तो बढ़कर सिर पर चढ़ बैठे उंगली चमका दी, बस मुआ आप खामोश हो जावेगा। आहा। इसी समाज में एक मुन्शी साहब भी आ उपस्थित हुए। पाठक भला कृपा कर दो बातें इन को भी सुन लीजिये आप फरमाते हैं। खांसाहब वाक़ई आप लोगों की गुफ़्गू बहुत ठीक है भला कहिए हम आपलोगों से क्या

किसी तरह कम हैं? हम भी तो क़लम का मुलायम काम जानते हैं। आप सरदारों को तान से मारते हैं हम मारते हैं कलम से। आप राजा लोगों को तान से मोह कर उन का खज़ाना खाली करते है हम उसे कलम से उलूबना कर रैयत को तबाह कर के रुपया निकालते हैं। गरज है कि लड़े मरेंगे भडुए उन के भाई बन्द जिनको यह पड़ी होगी कि इसके हाथ से राज्य जाने पर हम क्या करेंगे कैसे हमारी अबरू रहेगी? हम आप लोग तो कहा है कि जहां जावेंगे वहां आराम करेंगे। हमारी कलम बादशाही में चलेगी रयासत में चलेगी। नेकनामी बदनामी कोरठ सोरठ जिस की हो वह जाने हमें तो रुपया से काम। पाठक महाशय सुना आपने इन दुष्टों का परामर्ष देखिये जो मूढ़ मनुष्य दुष्ट कर्मचारियों के भरोसे रहते है रंडी भडुवे भांड़ भगतियों की लोलुपता में फसे रहते हैं किस प्रकार इस लोक में यश और परलोक में सुख पा सकते हैं। खैर इन वेईमानों को जाने दीजिए आए हम आप को युद्ध अस्थल दिखावें॥

ज्योंही पूर्व दिशा में सूर्य्य भगवान ने अपने आगमन की सूचना दी उसी समय रणस्थल में दोनों ओर से अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित कराल काल रूप धारण किए दोनों सेनाएं आ उपस्थित हुईं, आगे पैदल, तिनके पीछे अस्वारोही तिन के पीछे सुतर, हस्ती, इत्यादि और सब से पीछे तोपें विकराल मूर्ति धारण किए कादरों को कालरूप, शोभा देती थी। धौंसा पर चोप पड़ रही थी, तुरही बज रही थी, कड़खेत कड़खा गा रहे थे, चित्र विचित्र उत्तङ्ग ध्वजा पताका दोनों दलो में उड़ते हुए आकाश से बातें कर रहे थे। इस शोभा

मई युद्ध भूमि में बीर पुरुष आज अपना जन्म सार्थक जान नेज़े फिराते हुए घोड़े कुदाते थे। कायर समय पाकर भागने की राह ताकते जाते थे। बीर छत्रसाल, बलदिवान, कुंवर सेन धधंरा, अङ्गद राय चारों भाई अपनी २ सेना को उत्तेजना प्रदायक वचन सुना रहे थे बीर छत्रसाल जी ने पुकार कर यह श्लोक कहा॥

श्लोक। यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वार मपावृता।
सुखिनः क्षत्रियः पार्थलभंते युद्धमीदृशं॥ १॥

और घोड़े की बाग बढ़ा दी। शत्रुओं पर बीर बुन्देला इस प्रकार टूटे जैसे हाथियों के झुंड में क्षुधित सिंह का झुंड टूटे इसबार अग्न्यास्त्रो को किसीने पूछा भी नहीं। तलवार बरछी, बरछा, कुल्हाड़ी, पेशकबज, बिछुवा, तीर, तवल, तोमर, मुद्गर पट्टा वगैरह की मार रही। क्षण भर में भूमि रक्तमई सरोबर हो गई। बादशाही सरदार देव करण ने ६००० छैसौ सरो सवारों के साथ ले कर बीरछत्र साल जी को घेर लिया। इसी अवसर में छत्र साल जी का घोड़ा घायल हो गया इस आपत्ति में भी बीर छत्रसाल जी ने धैर्य न छोड़ा। छैसौ सवारो में घिरे हुवे जिस ओर झपटते थे शत्रुओं को काई सी फाड़ते जाते थे। इसी प्रकार एक घंटे पर्य्यन्त बीर छत्रसाल अकेले ६०० सवारो से लड़े। इतने में अंगद राव अपनी सेना लेकर आ गये और भाई को इस प्रकार घिरा देख करवे बड़ेक्रोध से इन सवारों पर टूटे और छत्रसाल जी को निकाल। लिया प्रातः काल से शयङ्काल तक बराबर लोहा झड़ा। सूर्य्य भगवान अस्त होते समय बीर छत्रसाल को। विजयलक्ष्मीप्रदान कर गये गोधूलीबेला

में जब सब लोग सब दिन हथियार चलाने के परिश्रम से श्रमित हो सिपाही सरदार सब शांन्तिचित हो कर अकुला उठे थे कि अंगद राव ने ८० असी सवार से घूम कर ही तोपखा ने पर आक्रमण किया और २१ तौपे अपने आधीन करली इसी पता का पर युद्ध का अंतहुवा। रात्रि को जिस समय यवन सेना मे चतुर्दिक निस्तब्धता थी सर्वजन युद्धपरिश्रम से श्रमित हो कर निद्रा देवी की गोद में शयन कर रहे थे कि वीर छत्रसाल जी ने रात्रि को फिर धावा कर दिया और अब की बार मैगजीन (बारूद गोली) के शकट लूटलिये। प्रातःकाल अबदुल समद ने अब युद्ध करने में अपना भला न विचार कर संधि कर ली वीर छत्रसाल जी वहां से कालिंजर होते हुए पन्ना में आये

इस घोर संग्रम में वीर छत्रसाल जी को ४ घावलगे थे इस लिये उन के अच्छे होजाने पर्य्यंत कहीं कुछ हल्ला गुल्ला न हुवा दो मास पश्चात एक सेना कोठी सुहावल को भेजी यहां के अधिपति हरीलाल गजसिंह ने कुछ दिवस पर्य्यन्त तो सामना किया परंतु वृथा प्रजाश्रेय तथा सैन्य की क्षिति देखा कर अंत में चौथ देना स्वीकार कर लिया और अपने पिण्ड छुड़ाये।

एक वर्ष व्यतीत हो गई भेलसा का समाचार न मिला, समाचार क्या मिले वहां तो इन के पीठ फेरते ही फिर मुस्लमानी कब्जा हो गया था। निदान इस बार फिर भी वीर छत्रसाल जी की सेना भेलसा की ओर पधारी इन की अवाई का समाचार सुनकर वहां का सूबेदार ९००० नौ हज़ार काबुली फ़ौज के साथ आगे बढ़ा उस की आगम की सूचना इन्हें भी दूत द्वारा मिल गई इस लिये जब दोनों सेनाओं

का दो पड़ाव का फ़ासला बाकी रहा तब आपने दो का एकही पड़ाव करके रातों रात चलते हुए प्रतः काल के चार बजते २ यवन सेना पर अक्रमण कर दिया इस बार बहलूल के ४० सवार हताहत हुए ।

निदान बहलूलखां पीछे भेलसा को लौठ गया । निकटवर्ती राजा जगतसिंह से सहायता लेकर फिर और सन्नद्ध हो बैठा । बीर छत्रसाल जी भी धीरे धीरे जा पहुंचे मैदान ही में सात दिन प्रर्य्यन्त दोनों दलों का घोर घमसांन युद्ध हुआ बीर *छत्रसाल जी रात वा दिन दोनों को लड़ते थे और इसी कारण यवन सेना बहुत करके छिन्न भिन्न कर डाली । सातवें दिन राजा जगतसिंह ने स्वयं बीर छत्रसाल पर आक्रमण किया और उस का परिणाम यह हुआ कि छत्रसाल जी के हाथ से वह मारा गया । और इसके मारे जाने से वह बहुत निराश हुआ और अपनी सेना हटा ली । बीर छत्रसाल जी ने भी अपनी बाग फेरी और साहगढ़ पर तोप बजाई। इसी समय बहलूल की रगों में फिर रक्त आया और उसने बीर छत्रसाल जी को जा घेरा परंतु फिर भी भागना पड़ा, साहगढ़ में अपना थाना बैठाल कर बीर छत्रसाल जी धामौनी की ओर पधारे । बहलूल की मृत्यु फिर यहां भी उसे खींच लाई । और इस स्थान (धामौनी) में बहलूल भी मारा गया ।

धामौनी से बीर छत्रसाल जी तो मउ को चले और बलदीवान ने ससैन्य जाकर कोटरा पर अपना अधिकार किया और बढ़ते हुए महोबे में आये । यहां से एक बार बांदा

---

* छत्रसाल जी अपने फ़ौज के दो दल रखते थे एक रात को लड़ने वाला दूसरा दिन को ।

की देख भाल करते हुए फिर लौट कर झांसी को चले गये। यहां पर भी अपना इन्तज़ाम ठीक देख कर किला *सिवड़ा पर ससैन्य पधारे। यहां पर दलेलखां पठान का नायब मुरादखां किले का मालिक था। इसने बुन्देलों को चार दिन पर्य्यन्त छेड़ा बहुत से शेख़, सैयद, मुगल, पठाणों का रक्त पात हुआ। चौथे दिन किला बुन्देलों के अधिकार में आ गया। और मुरादखां की प्राण हानि हुई। इस बात का चरचा भी सम्राट तक जा पहुंचा।

जिस वक्त दलेलखां दरवार शाही में आया शाह औरङ्गजेब ने फरमाया कि तुम्हारा भतीजा तो अब तुम्हारी रोटी पर भी लात देने लगा है। इस बात को सुन कर दलेल कान में तेल डाल कर चुप रहा। पर जब घर वापिस आया और अपने प्यारे मुराद के हतन होने का समाचार पाया तो बहुत घबड़ाया और तुरन्त उलटे पांव फिर दरवार को चला गया उसने बादशाह से प्रार्थना की कि जहां पनाह गुलाम का कुसूर माफ़ हो उस वक्त जो हुजूर का इरशाद हुआ था कमतरीन उसका मतलब समझ न सका था। जब मकान पहुंचा तो खुलासा सुनकर ताबेदार कदम बोसी में हाज़िर हुआ। चुनाचे अर्ज़ है कि मुझे मदद दी जावे तो मैं जाकर देखूं कैसा छत्रसाल है।

सम्राट औरंगजेब ने उसके इस प्रस्ताव को स्वीकार न किया और रुखा उत्तर दिया कि अपना बचाव आप करो। तब दलेलखां ने बीर छत्रसाल जी को एक पत्र लिखा जिस का अविकल सारांश यह है।

---

* इस वक्त दतिया राज्य में है।

"गरामी अख़तर बहयात राजा चम्पतराय मुझ से उन से पगड़ी बदला भाई चारा हुआ था। अब मैं इस वक्त इतायत सुलतानी में हूं और तुम को अपने भाई चम्पतराय का लड़का अपना भतीजा समझ कर लिखता हूं कि पीर दर मादः पर क्यों खराबी लाते हो मेरा मुख़तर कल्ला शाही नज़र में मुस्तहकम व महफूज़ था। मुनासिब है कि हस्ब आवई मुझ बूढ़े चचा यानी मेरे मुल्क से दस्तबरदार हो"।

इस पत्र को पाकर वीर छत्रसाल जी ने बलदिवान को एक चिट्ठी अपनी ओर से मय उस पत्र के भेज कर किला सैंवड़े को खाली करवा दिया। और जो उस का नुकसान हुआ था वह भी दे दिया।

जिस समय बलदिवान सिवड़ा से लौट कर आये कि चार पांच गांव के जमींदारों ने मिल कर रात्रि को इनके लशकर पर छापा मारा और मटेबँद के किले में जा छिपे। इस लिये बलदिवान ने तीन ओर से किला घेर लिया। इस आक्रमण में राम मन दौवा दीवान मारा गया। बलदीवान इसे बहुत चाहते थे। इस लिये बड़े क्रोधसे एक के ऊपर एक चढ़ते कटते मरते किले में घुस पड़े और किले में के कुत्ते तक को जीते न छोड़ा एक दिन में सारी मटेबँद सत्यानाश कर दीया।

उधर सम्राट औरंगजेब का भेजा हुआ शाहकुली नाम सेनापति बुन्देलखण्ड में आया और मुकाम चौराहट कोटरा-जलालपुर वगैरह छत्रसाल जी के फतह किये हुए स्थानों पर अपना दखल करता नौलीं के मुकाम पर ठहरा और छत्रसाल जी को अपने से मुक़ाविला करने का पैगाम भेजा।

वाद्य बजने लगे। तिसके साथ मारू राग का गान भी होते हुए बीरों का द्विगुण उत्साह बढ़ने लगा। उतङ्ग रण ध्वजा मेघ मालाओं के समान समस्त सेना को आच्छादित किये था। इस प्रकार गाजे बाजे से जा कर बीर छत्रसाल जी ने यवनों को जा ललकारा। मुसलमान भी बड़े कोप से झपटे। दोनों दलों में लोहा बजने लगा। बुन्देला लोग एक के उपर एक कटते हुठ तनिक भी न हटे। यवन और भी कुपित हो कर शस्त्राघात करने लगे और अन्त में बुन्देलों ने यवन सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। बीर छत्रसाल जी ने असमदखां पर तलवार उठाई कि अबदुलतीफ़ उसका मित्र भाग्यबश वहां आपहुंचा और सविनय प्रार्थना की कि हुजूर इस की जान माफ़ कीजावे। धन्य बीर छत्रसाल आपको ईश्वर पृथ्वीपति करता तब भी उचित था। बीर छत्रसाल जी ने उस के मित्र की इस प्रकार दीन बिणय सुनकर उसी उठे हुए हाथ से अपने बदला लेने वाले क्रोध को मारा और असमद को अभयदान दिया। पाठक महाशय यह उदारता विचार ने योग्य है। सत्पुरुष वही है जिन का अपने मन पर इतना अधिकार हो। किन्तु हाथ में आये हुए शत्रु को छोड़ देना भी तो मूर्खता है। इस लिये उसे बन्दी कर लिया और मउ तक ले आये यहां से उचित दण्ड लेकर छोड़ दिया।

शाहकुली की सेना यद्यपि असमद के साथ थी पर वह स्वयं अब तक शामिल जङ्ग न हुआ था वरन एसा विंकराल देख कर उसने दिल्ली से और मदद मङ्गाई। यहां से सम्राट की आज्ञानुसार राजा नन्दराय ८०० सवार लेकर आया और तब शाहकुली ने मउ पर आक्रमण किया। वही मैदान